शारदा पुस्तकालय
(...)
क्रमांक 1166

अभिनव-भक्ति-काव्य

स्वयंसिद्धा स्वयंप्रभा श्री वैष्णों लीला कथा

* लेखक *

रामकृष्ण शास्त्री "अम्बर"

* प्रकाशक *

श्रीराम प्रकाशन, १२२ श्रीरघुनाथ पुर, जम्मू-१८०००१

पहली बार : एक हजार (१०००) कीमत : ५-०० रु०

शारद नवरात्र अक्तूबर-१९८८

* मुद्रक *

लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस मेन रोड, गंगयाल, जम्मू-१८००१०

(सर्वाधिकार-सुरक्षित-प्रकाशन)

अभिनव-भक्ति-काव्य

स्वयंसिद्धा स्वयंप्रभा श्री वैष्णों लीला कथा

*** लेखक ***

रामकृष्ण शास्त्री "अव्यय"

*** प्रकाशक ***

श्रीराम प्रकाशन, १२२ श्रीरघुनाथ पुर, जम्मू-१८०००१

पहली बार : एक हजार (१०००) कीमत : ५-०० रु०

शारद नवरात्र अक्तूबर-१९८८

*** मुद्रक ***

लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस मेन रोड, गंगयाल, जम्मू-१८००१०

(सर्वाधिकार-सुरक्षित-प्रकाशन)

* अपनी बात *

अपना यह नवीन-लघु-काव्य-लेखन-प्रयास, आपबीती के अनुसार तीन आघातों का संपूरक-परिणाम है ।

निरन्तर निकट-विकट-संकट में पड़े रहने ने अपना अस्वस्थ जीवन प्रायः अस्त-व्यस्त रहता है । एक बार नई सुरंग (गुफा-मार्ग) के समुद्-घाटन पर श्री वैष्णों-दरबार में मनोनीत कार्यक्रम पर हाजिर होने का मुख-मोदक-निमंत्रण मिला और फिर अचानक ही वह प्रचार-प्रसार का कवि-दरबार स्थगित होने से अपने मन को अकथ-व्यथा का पहला आघात लगा ।

मनोविनोदपूर्वक समय-यापन हेतु स्वाध्यायानुकूल कुछेक छोटी-मोटी पुस्तकें लिखीं, जिनमें "श्रीदेवी गीता" भी थी । किन्तु एक भरोसेदार भले आदमी के आश्वस्त-संप्रकाशन में भी उसके अनछपे ही वहां छिपे रहने से, अपने मन को दर्द-दाता दूसरा आघात लगा ।

श्री वैष्णों-दरबार में नये परिवर्तन से समुत्पन्न वातावरण की चर्चा और परिचर्चा में सरासर गलत, असंगत अत एव अवांछित दुर्वाणी कि यह गुफा तो मियां डीडो (त्रिकुटा सिंह) ने अपने छिपने की खोह बनाई हुई थी । देवी-शैवी क़ा आडंबर तो बाद में पंडा एवं ठेकेदार-यजमानों की करारी करामात है । इस असंभव-निरर्गल-प्रलाप को सुन कर अपने को तीव्र-वेदनावाला तीसरा आघात लगा ।

इसलिये अतिखेद से अपनी असमर्थ, अस्वस्थ एवं असहाय दशा में भी मैंने यथा शक्ति और यथामति स्वाध्याय, श्रवण और मनन के अनुकूल आमूलान्त-निःशूल यह नई रचना प्रस्तुत की है ।

आशा है इस से सभी नई-पुरानी भ्रान्तियां सर्वथा निमूल होंगी और अपने डुग्गर का यह सिद्ध-सुप्रसिद्ध "श्री वैष्णवी पीठ" यथा वत् मान्यता और प्रामाण्यता से सर्वदा अग्रगण्य, वन्दनीय एवं अभिनन्दनीय ही बना रहेगा।

"—: अव्यय"

* समर्पण *

अपने आदरणीय अभिभावक, समय-सापेक्ष्य-साहाय्य-संविधायक, साहित्य-स्नेह-संपादक, समुत्साह-संप्रेरक, स्वयं समर्थ-लेखक सशक्त-संभाषक, सफल-समालोचक एवं अनेक साहित्य-संस्थाओं के सम्मान-संप्रस्थापक श्रीयुत पंडित बलदेव प्रसाद शर्मा जी के अमल-कर-कमलों में यह लघु-रचना सादर एवं सानुराग समर्पित करते हुए भी मेरा भावुक-हृदय, उनकी सक्रिय गुणवत्ता के वर्गीकृत वर्णन में संकोच का कवच धारण कर बैठा है।

"—: अव्यय"

* आभार *

इस लघुकाव्य के सद्यः संप्रकाशन में सफल-प्रयास करने वाले श्री अजीत कुमार खजूरिया और मुद्रण-आयास के लिये यथा मुद्रितनाम-मुद्रणालय के अधिकारी-परिवार का भी मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

"—: अव्यय"

—•—

* विषय सूची *

पहला विश्राम १

१ श्री वैष्णवीपीठ-शक्तिमूल-स्थल का पावन-संकल्प ।

२ श्री रामचरित कथा ।

दूसरा विश्राम ६

१ स्वयंप्रभा का परिचय । २ श्री रामचरित कथा ।

तीसरा विश्राम १७

१ श्रीराम चरित कथा । २ स्वयंप्रभा की सत्य-साधना ।

श्रीरामचरित कथा ।

चौथा विश्राम २५

१ श्रीरामचरित कथा ।

पांचवां विश्राम ३३

१ श्रीरामचरित कथा ।

छटा विश्राम ४१

१ मणिप्रभा-रत्नाकर की तीर्थयात्रा । २ श्रीरामचरित कथा ।

सातवां विश्राम ४६

१ श्रीरामचरित कथा । २ स्वयंप्रभा की तीव्र-साधना, परिपूर्ण सफलता, श्री वैष्णोदेवी-स्वरूप में सुप्रतिष्ठा और सर्वयुगीन पूजा ।

३ श्री वैष्णवी शक्तिपीठ की सत्ता-महत्ता की सुव्यवस्थानुसारी सुरक्षा-समीक्षा, आदि ।

—: "अव्यय"

०—०

अभिनव भक्ति-काव्य :- ॐ

स्वयंसिद्धा-स्वयंप्रभा

(श्री वैष्णो लीला-कथा)

* पहला विश्राम *

अजर अमर भारत की महिमा जग-जानी-पहचानी है ।
धर्म-धाम तीर्थों की गरिमा मनभानी सन्मानी है । १ ।
पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण सभी ओर हैं पुण्य-प्रदेश ।
पूर्वोत्तर-जम्मू-काश्मीर है भारत का अंग विशेष । २ ।
वीर धीर गंभीर सदा यह धर्मप्राण कहलाता है ।
सदियों का इतिहास पुराना विविध-वृत्त सुनवाता है । ३ ।
शक्तिपीठ वैष्णो माता का डुग्गर में है प्रकट हुआ ।
राजस-तामस दोष मिटाकर सत्वभाव निष्कपट हुआ । ४ ।
स्वयंसिद्ध शक्ति का सिद्धाश्रम तन-मन का पावन है ।
इसकी पुण्य-कथाओं से उज्वल होता जन-जीवन है । ५ ।
हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता ऋषि-मुनि-भक्त सुनाते हैं ।
उसी भान्ति हरि की भक्ति के विविध रूप-गुण गाते हैं । ६ ।
इस डुग्गर के शक्तिपीठ की गाथाओं का है विस्तार ।
जिसने जैसा देखा और सुना उसका कर दिया प्रचार । ७ ।

श्रद्धालु धर्मालु सज्जन भक्ति - भावना के अनुसार ।
अर्चन-वंदन-भजन-भेंट-अर्पण से होते सुखी अपार । ८ ।
स्वल्प-काल पहले भी भक्तों से भरता था श्री-दरबार ।
अब अपने स्वाधीन हिन्द में प्रगतिशील है जन-परिवार । ९ ।
बारह मास आते जाते देश-विदेशी लोग सभी ।
यथाकाम दर्शन-सुख-हेतु ठहरे रहते कभी-कभी । १० ।
नवयुग के इस नये वेश में परिवर्तन भी हुआ यहां ।
सुप्रबन्ध की बदल गई है पूर्ण-व्यवस्था जहां तहां । ११ ।
अच्छे-बुरे की चर्चा में बेकार वक्त क्यों खोना है ।
हमें समय के साथ बदल कर सर्वोदय-प्रिय होना है । १२ ।
इसीलिये भ्रम-जाल तोड़कर तथ्य-कथ्य कुछ जोड़ा है ।
नूतन और पुरातन सारे झगड़ों का रुख मोड़ा है । १३ ।
रामायण में "स्वयं प्रभादेवी" का है संक्षिप्त बखान ।
त्रेता युग की तीर्थमूर्ति पर लगा हुआ है मेरा ध्यान । १४ ।
पढ़-सुन कर वैष्णो देवी की गाथाएं लघु-ललित-ललाम ।
मनो-भावना सत्य-साधना-हित में है यह मेरा काम । १५ ।
कृतयुग में अभिशप्त हुए "जय-विजय" विष्णु के गोपुरपाल ।
त्रेता युग में रावण और कुंभकर्ण जो हुए कराल । १६ ।
उग्रवाद आतंकवाद के अगुआ थे दोनों भाई ।
मृत्यु लोक की करा है क्या स्वर्गपुरी थी घबराई । १७ ।
उनके तामस क्रूर कर्म से सुर-मुनि-नर सब थे डोले ।
हाहाकार मचा पृथ्वी पर सुर-गण छले गये भोले । १८ ।
दानव-भय से लुप्त हुए स्वाध्याय-स्वधा-स्वाहा-आचार् ।
देव-यज्ञ के बिना हुआ संलुप्त देवकुल-शिष्टाचार । १९ ।
दीन-हीन-प्रक्षीण धरा को लेकर साथ हुए लाचार ।
देव-वृन्द सब संघ बना कर गये विधाता के दरबार । २० ।

श्री ब्रह्मा का वहां सनक आदि सिद्धों ने स्तवन किया ।
सुखासीन विधि को देखा सुर-दल ने सादर नमन किया । २१ ।
उन्हें बैठने को कह कर ब्रह्मा ने अपनी शरण लिया ।
तत्क्षण उनसे पूछ लिया किस कारण है आगमन किया । २२ ।
सुन कर ब्रह्मा की वाणी सारे सुर सप्त-स्वर से बोले ।
क्रम से अपनी पद-हानि का हाल कहा हौले-हौले । २३ ।
बली-छली राक्षस-कुल द्वारा हम सब के आसन डोले ।
हे स्रष्टा, अब करो सुरक्षा हम हैं शरण पड़े भोले । २४ ।
ज्ञान नहीं सम्मान नहीं ईश्वर का भी गुण-गान नहीं ।
स्वर्ग-मर्त्य में कहीं दीखता दुखियों का संत्राण नहीं । २५ ।
दंभ - दर्प - मद - मोह - काम का होता है अवसान नहीं ।
वर्णाश्रम-मर्यादा का है कोई कहीं निशान नहीं । ३६ ।
राक्षस-दल का जग-भक्षक अब अत्याचारी शासन है ।
बदखोरी - चोरी - सीनाजोरी का ऊँचा आसन है । ३७ ।
सभी ओर मानव-जीवन में अतिशय भय का दर्शन है ।
मिथ्याहार-विहार दोष से जीव मात्र का घर्षण है । २८ ।
बने तमोगुण के अपराधी शिक्षा के संस्थान यहां ।
अचल-चरित की रक्षा वाला बंद हुआ अभियान यहां । २९ ।
गुरु-दीक्षा में मिले दक्षिणा गाली का अपमान यहां ।
गुरु-गुण-गौरव-गान-मान का हुआ स्वयं अवसान जहां । ३० ।
पड़ी भाड़ में सहज मित्रता स्वार्थभावना इठलाती ।
रोग-शोक भय की क्रीड़ा सब ओर यहां देखी जाती । ३१ ।
गो-धन की परवाह नहीं है चाह भरा अभक्ष्य भक्षण ।
सुरा-सुन्दरी से आकृष्ट नष्ट - भ्रष्ट हैं जन-जीवन । ३२ ।
लूट-मार व्यभिचार-भार से दुखी हुआ है संयम-धन ।
खल-दल-बल का खेल मचा है हठधर्मी-नंगा-नर्तन । ३३ ।

भोग-परायणता है अब तो तामस-रुचि की साध घनी ।
स्वच्छ-भावना सत्य-साधना की रीति अपराध बनी । ३४ ।
खाओ पिओ जिओ की दुर्नीति है रुचिर अगाध बड़ी ।
मादक वस्तु दुष्ट-कर्म की इच्छा है निर्बाध बढ़ी । ३५ ।
कौन करे किसकी चर्चा सब उल्टा-पुल्टा होता है ।
हँसता है असत्य यहां अब सत्य अकेला रोता है । ३६ ।
नीर-क्षीर के चिर-अबोध से जन-जीवन दुख पाता है ।
अब आंखों में आंसू उभरें दानव-मन हर्षाता है । ३७ ।
रोम रोम में भरी वेदना देख-देख अकुलाये हैं ।
जैसे कैसे दुःखों के अनुभव दृष्टि में आये हैं । ३८ ।
वही सुनाने करुण-कहानी हम सब मिलकर धाये हैं ।
हे ब्रह्मा अतिनिकट-विकट-संकट के बादल छाये हैं । ३९ ।
श्री ब्रह्मा ने सुनी व्यथा तत्क्षण मन में ध्यान किया ।
श्रीमन्नारायण विष्णु का मौनमुखी-गुणगान किया । ४० ।
पाकर शुभ संकेत हृदय में सुर-गण का कल्याण किया ।
लेकर साथ उन्हें विधि ने श्री विष्णु-धाम-प्रस्थान किया । ४१ ।
ऋद्धि-सिद्धि-बल-बुद्धि-विधाता नारायण का शोभाधाम ।
श्रीपति लोकपाल विष्णु से था संशोभित ललित-ललाम । ४२ ।
जाते ही सुर-प्रतिनिधि श्री ब्रह्मा ने हरि को किया प्रणाम ।
हर्षित होकर दिया प्रभु ने वरद-हस्त से वर अभिराम । ४३ ।
सर्व-नियन्ता स्वयं प्रभु सर्वज्ञ सकल-मंगलदानी ।
लोक रीति से फिर बोले श्री ब्रह्मा से सुन्दरवाणी । ४४ ।
कहें विधाता आज यहां किस कारण आये सन्मानी ।
देव-वृन्द क्यों मुख-मलीन सब दीख रहे हैं अज्ञानी । ४५ ।
अवसर पाकर शीस नवा कर श्री ब्रह्मा ने किया बखान ।
देव संघ का क्लेशभरा अब सुनें आप मार्मिक आख्यान । ४६ ।

नाथ, हरो सब दुःख विश्व में बढ़ा हुआ दानव-अभिमान ।
पृथ्वी पर अवतार धार कर स्वयं किजिये जन-कल्याण । ४७ ।
सुरपुर भू-पुर के वर नायक सभा सजाकर करें विचार ।
सर्व सम्मति से मिलकर रक्षा-हित आये हरि के द्वार । ४८ ।
स्त्री समाज की मुखिया पृथ्वा ने धारा धेनु का रूप ।
गो-द्विज-हितकारी श्री हरि के प्रथम प्रमुख प्रण के अनुरूप । ४९ ।
अपनी आंखों देखा, सुना, भोगा हुआ सभी दुख भोग ।
दैत्य दलों से दलित, भ्रष्टपद स्वयं सुनाते हैं सुर लोग । ५० ।
पृथ्वी बोली भुवनपते, मैं पाप भार से कंपित हूं ।
मद्य मांस व्यभिचार दोष से सदा स्वयं आतंकित हूं । ५१ ।
निर्मम हत्या दुराग्रहों के जोर शोर से शंकित हूं ।
हाय, कहूं क्या मातृ भाव के विनां अनार्य कलंकित हूं । ५२ ।
भोले शंकर बोले हरि से लुटा धर्म हे पालनहार ।
नास्तिकवाद भरा जग में है फैल गया अति भ्रष्टाचार । ५३ ।
तामस-जन मा ण मोहन का करते है पूजा उपचार ।
वरदानों के ढोंग रचाकर करें प्रजाओं का संहार । ५४ ।
कहा इन्द्र ने, नहीं मानता कोई मेरा अनुशासन ।
यज्ञ भाग तो दूर रहा, करते हैं कामी दुर्भाषण । ५५ ।
अपने ही दुष्कर्मों से कर लिया अशुचि-जल का वर्षण ।
सार हीन दाना-पानी में भरे हुए सारे दूषण । ५६ ।
अग्निदेवता बोल उठे हे नाथ, सुनाऊँ क्या विपदा ।
होम-धूम की सुरभि तो अब धरा-धाम से हुई विदा । ५७ ।
अब तो मांस मदिरा अ दि द्रव्यों का करते हैं भोग ।
भान्ति-भान्ति के दूषित-भक्ष्य-पेयों के वशवर्शी लोग । ५८ ।
वायु ने फिर कहा न कोई मेरा है सत्कार रहा ।
गंदे विषमय दुर्गन्धों से है सारा संचार भरा । ५९ ।

सर्दी-गर्मी-वर्षा का व्यतिक्रम अब है दुष्वार बड़ा ।
रोग-शोकमय-जन जीवन का मेरे सिर पर भार पड़ा । ६० ।
वरुण देवता बोल पड़े दैत्यों ने पाप बढ़ाये हैं ।
दूषित कर मल मूत्रों से जग जीव सभी भरमाये हैं । ६१ ।
तरह तरह की करें मिलावट रस मेरा गंदलाया है ।
जल निग़म पर रोक लग़ाकर मेरा मान घटाया है । ६२ ।
दया करो हम शरण पड़े हैं नाथ, हमारी सुनो पुकार ।
हमने अपनी कही कहानी सादर विनय करो स्वीकार । ६३ ।
धर्म-विजय पापों का क्षय करने को लेते हैं अवतार ।
युग-युग में भगवान् आप साकार बनो अब जगदाधार । ६४ ।
सुर-गण की सब सुनी कथा श्री हरि ने प्रण का ध्यान किया ।
आश्वासन देकर फिर बोले दनुज-दलन को मान लिया । ६५ ।
जाओ अब तुम स्व-स्वरूप में रहो उन्हें वरदान दिया ।
स्वंय धरा पर आने का दृढ़ निश्चय मन में ठान लिया । ६६ ।
नाम-धाम-गुण ग्राम प्रभु के समझ-समझ कर सुख पाया ।
सुर समूह हरि वचनों को सुन कर निज मन मैं हर्षाया । ६७ ।
जय-जयकार किया सब ने प्रभु धन्य तुम्हारी है माया ।
विश्वपति विश्वंभर का गुण-गान मधुर मिलकर गाया । ६८ ।
हर्षित होकर अपनी अपनी जगह सभी वापिस आये ।
भक्ति-भाव से हरि लीला के दृश्य देखने ललचाये । ६९ ।
करें प्रतिक्षा प्रभु के आने की लोचन जल भर लाये ।
दानव-कुल अवसान हेतु शुभ लक्षण मन में हुलसाये । ७० ।
श्री लोकेश्वर लीलाधर की लीला-कला निराली है ।
"एकोहंवहु स्याम्" प्रण को पूरा करने वाली है । ७१ ।
सत् की रक्षक असत्-रूप को बल से हरने वाली है ।
राई को पर्वत-पर्वत को राई करने वाली हैं । ७२ ।

दीनबंधु गुणसिंधु प्रभु की प्रभुता गुरुता भाती है ।
विविध-चरित्रों से युग-युग में श्रुति-गोचर हो जाती है । ७३ ।
स्वयं सुकर्माचरणों से ही सत्यमार्ग दिखलाती है ।
जरा-जन्म-मृत्यु के बंधन जीवों के तुड़वाती है । ७४ ।
श्री विष्णु ने जिस प्रकार था दिया सुरों को आश्वासन ।
क्लेश-निवारण करने को स्वीकार किया अवतार-ग्रहण । ७५ ।
अपनी योग सिद्ध माया को बना लिया उद्भव-साधन ।
धरा धाम पर प्रकट हुए मंगल-स्वरूप श्री नारायण । ७६ ।
चैत्रमास की शुक्ला नवमी का दिन पावन बना महान् ।
आये हरि भू-भार हरण हरि जन तारण कारण भगवान् । ७७ ।
अवध पुरी के रघुवंशी राजाओं का था पुण्य विशाल ।
सर्व सुखी दशरथ का चमका चौथेपन में उज्वल भाल । ७८ ।
कौशल्या कैकेयी और सुमित्रा तीनों धन्य हुई ।
राम भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न पुत्रों से संपन्न हुई । ७९ ।
एक साथ राजा रानी सब मंगल शोभा पाते थे ।
देख-देख कर अनुपम शिशुओं को मन में हर्षाते थे । ८० ।
यथा शास्त्र संस्कार हुए संपन्न बाल-सुकुमारों के ।
दान मान भरपूर हुए सब यथा रोग्य परिवारों के । ८१ ।
राजकुमारों की अद्भुत लीला से कुल-जन हर्षाये ।
राग-रंग प्रिय सखा संग बहुं-ढ़ंग उन्होंने दिखलाये । ८२ ।
दिन-दिन नूतन-मंगल होने लगे सकल भू-मंडल में ।
प्रकट हुए फिर सभी कुलक्षण मरणासन्न-दनुज-दल में । ८३ ।
गुरु-गृह में सब शिक्षा पाई शस्त्र-शास्त्र की यथा विधान ।
मात-पिता के आज्ञाकारी चारों भाई रहें समान । ८४ ।
समुचित समय जान कर आये विश्वामित्र राज-दरबार ।
राम और लक्ष्मण जो ले गये यज्ञ-सुरक्षा के आधार । ८५ ।

जंगल में मंगल जब देखा दौड़ी आई निशाचरी ।
राम बाण से मरी ताड़का जा पहुंची यमराजपुरी । ८६ ।
उसी समय मारीच-सुबाहु आदि राक्षस हार गए ।
राम बाण से मरे और कई उड़े सिंधु के पार गए । ८७ ।
वीर-धीर-गंभीर राम-लक्ष्मण करते मख की रक्षा ।
विश्वामित्र मुनीश्वर से पाते थे समयोचित शिक्षा । ८८ ।
वनवासी ऋषि के आश्रम पर राज-निमंत्रण आया था ।
मिथिला के श्री जनकराज ने धनुष यज्ञ रचवाया । ८९ ।
उनकी पुत्री सीता का यज्ञोत्सव सही स्वयंवर था ।
सभी ओर से राजवंश वीरों का मिलन परस्पर था । ९० ।
हर्षित होकर चले मुनीश्वर संग लिये प्रिय अवधकुमार ।
उन्हें देख कर नभचर थलचर जलचर होते सुखी अपार । ९१ ।
वन पथ में अभिशप्त अहल्या शिलारूप थी पड़ी हुई ।
राम चरण रज स्पर्श मात्र से नारी बन कर खड़ी हुई । ९२ ।
हाथ जोड़कर उस देवी ने राम नाम गुण गान किया ।
हरि भक्ति शक्ति से प्रेरित पति के पास प्रयाण किया । ९३ ।
ज्ञानी विज्ञानी गुरु शिष्यों की शोभा थी बड़ी अपार ।
जनकपुरी में सब से पाया अभिनन्दन स्वागत सत्कार । ९४ ।
जनकराज का रम्य मनोरथ यथाकाल संपन्न हुआ ।
राम विजय से त्रिभुवन गूंजा सभ्य समाज प्रसन्न हुआ । ९५ ।
बजी बधाई मंगलदाई रीत निभाई दो कुल की ।
चार कुमारी चार कुमारों की शादी अति मंगल थी । ९६ ।
धनुष भंग के समय पड़ा था थोड़ा विघ्न सभा अन्दर ।
परशुराम को राम परीक्षा कठिन अन्त में थी सुन्दर । ९७ ।
अवधपुरी से राजा दशरथ आये बंधु गणों के साथ ।
शास्त्राचार वंश की रीति मिथिला में हो गये सनाथ । ९८ ।

अवध-कुमारों का विवाह संपन्न हुआ संयोग अपार ।
धन्य हुई मिथिला-कुमारियां गण्य मान्य दो नृप-परिवार । ९९ ।
जय-जयकार हुई दोनों की घड़ी सुहानी आई थी ।
चार डोलियों की अनुपम मिथिला से हुई विदाई थी । १०० ।

—०—

* दूसरा विश्राम *

इधर सफल था मर्त्यलोक में हुआ स्वयंवर-आयोजन ।
उधर कुशल गंधर्वलोक में हुआ अनोखा परिवर्तन । १ ।
रत्नाकर-गंधर्वश्रेष्ठ की युवती कन्या स्वयंप्रभा ।
अमृतमंथन-कथा श्रवण कर सहसा हुइ मंत्रमुग्धा । २ ।
रत्नाकर-सागर की बेटी लक्ष्मी विष्णु को भाई ।
मैं भी रत्नाकर की बाला अपनाऊँगी चतुराई । ३ ।
सती-विरह से महादुखी शिवजी ने था विष-पान किया ।
पार्वती को अपना कर फिर शंकर ने सम्मान दिया । ४ ।
वेदवती ने सीता बन कर वरण किये हैं रघुराई ।
मेरे तप पर भी रीझेगी श्री विष्णु की प्रभुताई । ५ ।
मात-पिता से आज्ञा मांगी रत्नाकर-सागर के तीर ।
आकर गिरि-वन के पर पर गुप्त-गुफा देखी गंभीर । ६ ।

उसमें आसन लगा लिया अपने मन से गृह-त्याग दिया ।
"मैं विष्णु की दासी हूं" सद्भावपूर्ण अनुराग किया । ७ ।
मात-पिता ने कभी नहीं उसकी इच्छा को ठुकराया ।
जन्म-काल से ही उसके सात्विक-जीवन को पुजवाया । ८ ।
शैशव में जो तीन देवियां उसे देखने आई थीं ।
भले रहीं अज्ञात-वेश में वहां न छिपने पाई थीं । ९ ।
लक्ष्मी-शिवा-शारदा देवी ने उस बाला को देखा ।
आपस में संकेतपूर्ण सद्भावों की खींची रेखा । १० ।
उसी भेंट में सम्मुख आकर अपनापन प्रकटाया था ।
श्री लक्ष्मी ने उसका नाम स्वयंप्रभा रखवाया था । ११ ।
तीन देवियों की बातों से लोकोत्तर सुख माना था ।
रत्नाकर और मणिप्रभा ने शक्ति-तत्व पहचाना था । १२ ।
शुक्लपक्ष की चन्द्रकला जैसी वह कन्या बढ़ी-चढ़ी ।
जन्मजात गंधर्ववंश की विद्या उसने स्वयं पढ़ी । १६ ।
पूर्व-युगों के संस्कारों से तपोभावना जाग पड़ा ।
सार-मंथन-कथा सुनी तो वह आगे फिर स्वयं बढ़ी । १४ ।
उसकी एक सखी साध्वी का नाम धन्य था हेमलता ।
जिसने उसको गुप्त-गुफा-आश्रम का पूरा दिया पता । १५ ।
वह थी अपने पति-वियोग में जप-तप-व्रत आधीन हुई ।
स्वयंप्रभा को क्रम समझा कर ब्रह्मभाव में लीन हुई । १६ ।
हरा-भरा वह गुप्ताश्रम था सहज-शान्ति-सुख का आधार ।
कभी कभी फिर स्वयंप्रभा सागर तट पर करती संचार । १७ ।
रत्नाकर-सागर की लहरें मूक-वधिर-सी लहरातीं ।
खग जाने खग की भाषा कुछ स्वयंप्रभा को समझातीं । १८ ।
समय समय पर रत्नाकर और मणिप्रभा दोनों आते ।
रत्नाकर-सागर से अपना बन्धु-भाव थे अपनाते । १९ ।

उनका शुभ मंगल-संदेश सागर भी सुन लेता था ।
स्वयंप्रभा के संयम का संवाद उन्हें दे देता था । २० ।
प्राणप्यारी परमदुलारी सुकुमारी कन्या की साध ।
देखी-सुनी-गुनी मानस में मात-पिता ने बड़ी अगाध । २१ ।
कुल पवित्र, माता कृतार्थ है, पिता धन्य, जिसकी संतान ।
लोक और परलोक सुधारे करे निरन्तर हरि का ध्यान । २२ ।
जैसे जैसे स्वयंप्रभा की सत्य-साधना चली रही ।
वैसे वैसे मात-पिता की मनो भावना पली रही । २३ ।
श्री लक्ष्मीनारायण का वे दोनों करते चिन्तन ।
गौरी शंकर की लीला में कभी लगाते अपना मन । २४ ।
सीता-राम महासुखधाम बांकी-झांकी प्यारी थी ।
समवर्ती जिसकी चर्चा-परिचर्चा बड़ी न्यारी थी । २५ ।
कभी कभी उद्योग स्वयं ऋषि-मुनियों के आश्रम जाकर ।
श्रद्धामय-विश्वास बढ़ाते उनसे शुभ-शिक्षा पाकर । २६ ।
लगा रहा गंधर्वलोक से भूतल पर आना-जाना ।
पुण्य-नदी-तीर्थों पर आते सुख पाते थे मन-भाना । २७ ।
राम चरित हो रहा अनोखा त्रेता-युग में महामहान् ।
उसे देखते -कहते-सुनते उनका समय रहा गतिमान् । २८ ।
दशरथ जनकराज के पुण्योदय से पूरा काम हुआ ।
सभी ओर जन-गण के पावन मन में सुख अविराम हुआ । २९ ।
आये अपनी अवध पुरी में युगल-मूर्ति फिर राजकुमार ।
स्थावर-जंगम जीव जगत् के करने लगे मंगलाचार । ३० ।
सफल-काम दशरथ ने सोचा मनभाया कुलक्रम पावन ।
बड़े पुत्र श्रीरामचन्द्र को करूँ समर्पित सिंहासन । ३१ ।
गुरु-वशिष्ठ और मंत्रीगण से सुखद विचार-विमर्श हुआ ।
राजा राम बनें अति सत्वर सुनकर सबको हर्ष हुआ । ३२ ।

शोध लिया मंगल-मुहूर्त अभिषेक हेतु सब शास्त्राधार ।
"श्रेयांसि बहुविघ्नानि भवन्ति" लोकोक्ति-अनुसार । ३३ ।
प्रबल-विघ्न बाधा ने अपना दुर्मुख पल में दिखलाया ।
कैकेयी को मुखर-मंथरा दासी ने था बहकाया । ३४ ।
कोप भवन में स्त्री-चरित्र का अभिनय अति विचित्र हुआ ।
जिससे सुख के समय दुःख का नाटक था अपवित्र हुआ । ३५ ।
हाय, पिशुनता बड़ी बुरी है फूट डाल कर घर लूटे ।
राम-रमैया के मधुवन में विष के विषमांकुर फूटे । ३६ ।
वचनबद्ध प्रणपालक अपने पूज्य-पिता की आज्ञा से ।
राम बने वनवासी सुन कर प्रजा घिर गई विपदा से । ३७ ।
मंगल में हो गया अमंगल स्तंभित श्रोता-दर्शक थे ।
रामचरित में नर-नारायण उभय-पक्ष आकर्षक थे । ३८ ।
जिसने जैसा सुना वही वहां दौड़ कर आ पहुंचा ।
पल भर में वह राजभवन हुआ शोक-मय-गृह जैसा । ३९ ।
राम हुए तैयार तभी सीता ने साथ निभाने का ।
प्रण ठाना लक्ष्मण ने भी मुश्किल में हाथ बंटाने का । ४० ।
सब से मिलकर सबकी सुन कर सबको आश्वासन देकर ।
राम गये वनवास साथ में सीता-लक्ष्मण को लेकर । ४१ ।
हर्ष-अमर्ष नहीं मन में समता-व्यवहार-परम-अभिराम ।
रविकुल-भूषण मर्यादा-पुरुषोत्तम कहलाये श्रीराम । ४२ ।
जहां तहां पथ में चलते ग्रामीण-जनों से घिर जाते ।
प्रश्नोत्तरपूर्वक अग-जग के स्वामी स्वयं विदा पाते । ४३ ।
तीर्थराज में भरद्वाज के आश्रम को सम्मान दिया ।
स्नान-ध्यान-गुण-गान-त्रिवेणी-संगम पर सविधान किया । ४४ ।
श्रृंगवेरपुर में जाकर स्वीकार किया गुह का सत्कार ।
सखा बनाया, लौटाया मंत्री सुमंत्र को अवध-मंझार । ४५ ।

भिल्लवीर के जागे भाग्य उसने तन-मन वार दिया ।
राम-प्रभु के साथ-साथ फिर गिरि-वन में संचार किया । ४६ ।
आगे फिर यात्रा के हेतु जाना था गंगा के पार ।
लाई नाव, पिया केवट ने हरि चरणोदक-अमृतसार । ४७ ।
भक्त और भगवान् मिले अन्तर्भावों के दीप जले ।
नदी और भवसागर के दो मल्लाहों में प्रति पले । ४८ ।
वन-पथ-श्रम सहते कहते सुनते ऋषि मुनियों के गुण-ग्रान ।
अग्रेसर ही रहे राम भगवान् और प्रिया सखा सुजान । ४९ ।
वाल्मीकि ने राम प्रभु को स्थान बताये रहने के ।
अगम-अगोचर हरि के सुगम-सगुन-चरित में कहने के । ५० ।
चित्रकूट पर बन्धु सहित श्रीराम विराजे शोभागार ।
बड़े-बड़े ऋषि-मुनि दर्शन हित आते पाते अति सत्कार । ५१ ।
नित्य नया सत्संग जुटाकर स्वयं मिटाकर शंका-जाल ।
जभिमत मत-सम्मत को पाकर स्वयं सराहें अपने भाल । ५२ ।
अत्रि-अनसूया ने आश्रम स्वयं पधारे श्री भगभान् ।
उनका वह उपदेश-विशेष करता है जीवन-कल्याण । ५३ ।
राम-सीता-लक्ष्मण-शोभित कुटिया बड़ी सुहाती थी ।
चित्रकूट की पर्णकुटी से अमरावती लजाती थी । ५४ ।
इधर स्वयं जंगल में मंगल बना हुआ प्रभु का वनवास ।
उधर अयोध्या मैं व्याकुल थी प्रजा और सारा रनिवास । ५५ ।
राम-विरह तड़प-तड़प दशरथ ने प्राण गंवाये थे ।
राजमहल में सुख के बदले दुःख घनेरे छाये थे । ५७ ।
भरत और शत्रुघ्न बुलाये गये तुरत गुरु आज्ञा से ।
मामा के घर गये हुए दोनों थे पितृ-आज्ञा से । ५७ ।
काश्मीर के पास बसा कैकेय नाम कमनीय प्रदेश ।
मैका था कैकेयी का चले वहां से भरत-विशेष । ५८ ।

जम्बू - प्रस्थ जम्बू - मार्ग जम्बू - तीर्थ डुग्गर का ।
जम्बू - जम्मू यात्रापथ बना तभी अग्रेसर था । ५९ ।
यथा शीघ्र लौटे तो देखा लुटी-पुटी है अवध पुरी ।
अपशकुनों से संशय नाना उठते मन में घड़ी-घड़ी । ६० ।
अन्तर्गृह में शोकातुर परिवार सकल था मौन पड़ा ।
गुरु-वशिष्ठ से बढ़कर फिर आश्वासन देता कौन बड़ा । ६१ ।
सुनो भरत, भावि प्रबल त्रिलख कहें मुनिनाथ स्वयम् ।
हानि-लाभ-जीवन-मरण-सुख-दुःख विधि के हाथ स्वयम् । ६२ ।
देखा-सुना दुरा वह सारा सुख में दुख भरा व्यवहार ।
वन में राम-गमन् घर में था पितृ-मरण का शोकाचार । ६३ ।
मां कैकेयी को फटकारा धिक्कारा उस दासी को ।
मुई मंथरा उज्वल-रघुकूल-कंठ-ग्रहिणी फासी को । ६४ ।
गुरूजन-परिजनों-पुरजन को फिर समझाये अपने सुविचार ।
सब ने जाना कहीं नहीं है भरत-भाव में कपटाचार । ६५ ।
उत्तरकर्श किया दशरथ का सभा बुलाई मुखियों की ।
राम-राज के रोक-शोक से क्षीण-प्राण-जन-दुखियों की । ६६ ।
आग लगी थी तन-मन में प्राणों में पीड़ा भरी हुई ।
कैकेयी-मंथरा-कुमति से प्रजा दुखी थी बड़ी हुई । ६७ ।
भरत-भाव से जान गये जय बोले सीताराम सभी ।
वहीं अयोध्या बनी रहेगी जहां बसे हैं राम सही । ६८ ।
वीर-धीर-गंभीर भरत ने पूर्ण समर्थन पाया था ।
"शरणागीत-परिपाटी" से पथ से फिर कदम बढ़ाया था । ६९ ।
यशायोग्य पूरा प्रबन्ध कर दिया अवध की रक्षा का ।
चले भरत गुरुजन सब के संग था ग्रमाण शुभ-शिक्षा का । ७० ।
अभी इधर से भरतवीर का आगे बढ़ा सकल परिवार ।
तभी उधर से जनकराज का चला आ रहा था दरबार । ७१ ।

यथा काल वे दोनों दल अलग-अलग आ रुके वहां ।
चित्रकूट की सीमा में राम प्रभु थे टिके जहां । ७२ ।
उमड़-घुमड़ कर आने वाले दल-विशेष के दर्शन से ।
लक्ष्मण-गुह आदि वीरों को शंका हुई विमर्शन से । ७३ ।
निरख-परख कर भला-बुरा सीता का देखा सपना ।
राम-प्रभ ने सबको समझाया मत सम्मत फिर अपना । ७४ ।
सावधान हो गये सभी भ्रम-विभ्रम तभी हुए निर्मूल ।
भू-पर गिरे भरत ने धारी सिर पर रामचरण की धूल । ७५ ।
नवधा-भक्ति का सर्वस्व आत्म-निवेदन होता है ।
नयनों की गंगा-यमुना से भक्त प्रभु-पद धोता है । ७६ ।
अमर-कथा रामायण को हरती है जीवन के संताप ।
त्यागी और विरागी की लांकी बांकी है भरत-मिलाप । ७७ ।
गुरु-वशिष्ठ ज्ञानी-मिथिलेश देख-देख हर्षाये थे ।
धन्य राम हैं धन्य भरत बड़भागी सम्मुख आये थे । ७८ ।
चर्चा-परिचर्चा से अन्तिम निर्णय पाया था अनमोल ।
रामचन्द्र की चरण-पादुका लेकर लौटे भरत अडोल । ७९ ।
सिंहासन पर उन्हें बिठाया स्वयं लगाया भौमासन ।
नंदी-गांव बना अनुपम था राम-राज का उदाहरण । ८० ।
वनवासी अगणित जीवों ने इधर-उधर चर्चा सुन कर ।
जहां-तहां प्रभु-दर्शन पाये भरत-मिलन के अवसर पर । ८१ ।
सबको सन्माना प्रभु ने माना सबका भारी उपचार ।
सबको सत्य-साधना के नियमों का समझाया सुख-सार । ८२ ।
चलते-फिरते माया-छाया के पुतले राक्षस धाये ।
ढूंड-ढूंड कर मारे प्रभु ने फिर दण्डक-वन में आये । ८३ ।
पंचवटी में पर्णकुटी अटपटी भुमि पर पधराई ।
उन्हें दूर से देख। तत्क्षण शूर्पनखा दौड़ी आई । ८४ ।

कामरूपिणी वह थी रावण-कुंभकर्ण की सगी बहन ।
वन्य-शिविर में उसके ही भाई थे त्रिशिरा-खर-दूषण । ८५ ।
वहां स्वैरिणी शूर्पनखा ने रूपवती नारी का रूप ।
धारण कर छलना चाहा था राम-चरित्र -अखण्ड-अनूप । ८६ ।
सकल-नयन-अभिराम राम ने लक्ष्मण को संकेत दिया ।
कुलटा ने शिक्षा ठुकराई सीता आवेग किया । ८७ ।
तब लक्ष्मण ने तीक्ष्ण-तीर से काट दिया जो उसका नाक ।
वह नकटी भृकुटी टेढ़ी कर दौड़ी खर-दूषण के पास । ८८ ।
चेहरा लहु लुहान हुआ देखा तो पूछा भाईयों ने ।
बात सुनी, अतिक्रोध किया अनजाने क्रूर-कसाईयों ने । ८९ ।
चौदह हजार राक्षस-सेना लेकर चले दनुज-भाई ।
राक्षस-दल-बल आते देखा समझ गये सब रघुराई । ९० ।
सीता को लक्ष्मण के द्वारा गुप्त-गुफा में रखवा कर ।
स्वयं सिंह-सम डटे राम थे राक्षस पशुओं को पाकर । ९१ ।
एक बाण मारा था ऐसा राक्षस सब उन्मत्त हुए ।
राम-रूप अपनों को देखा पार काट में व्यस्त हुए । ९२ ।
यह कमाल था अपने अक्षय-अस्त्र-शस्त्र निर्माणों का ।
वर्तमान में भी मिलता है वर्णन तीर कमानों का । ९३ ।
पल भर में सारी सेना दैत्यों की आपस में लड़कर ।
यमपुर पहुँची त्रिशिरा-खर-दूषण के साथ स्वयं मर कर । ९४ ।
दैत्य-शिविर-संहार -किया दुश्मण की एक चुनौती थी ।
दानवता के अन्तकाल पर मानवता खुश होनी थी । ९५ ।
रावण के विस्तारवाद की सीमा-चौकी नष्ट हुई ।
तब नकटी-छटीपटी-राक्षसी-शूर्पनखा पथ-भ्रष्ट हुई । ९६ ।
दौड़ी गढ़-लंका में जाकर भड़काया रावण-दरबार ।
राग-रंग में मस्त दशानन तो सुनाई कपट-पुकार । ९७ ।

उसे देखकर, वाणी सुनकर रावण स्वयं हुआ हैरान ।
त्रिशिरा-खर-दूषण-संहारी हैं नर-नारायण भगवान् । ९८ ।
फिर भी उसने अहंकारवश प्रभु से वैर-विरोध किया ।
संयम-धन को भूल गया सात्विकता का अवरोध किया । ९९ ।
शूर्पनखा के बहकाने पर उसे कुनीति मन-भाई ।
सीता के अपहरण-हेतु फिर कपट-कुरीति अपनाई । १०० ।

* तीसरा विश्राम *

कामी-क्रोधी मतवाला हो गया महापंडित रावण ।
विनाश-वेला आने पर थे भुला दिये सारे सद्गुण । १ ।
कपट-पटु मारीच-नीच को मामा का आदर देकर ।
साम-दान और भेद-दंड से अपने साथ उसे लेकर । २ ।
पंचवटी की ओर गया मारीच स्वर्ण-मृग था मचला ।
श्रीरामाश्रम - पर्णकुटी के आस - पास दौड़ा - उछला । ३ ।
सीता का मन ललचाया फिर स्वयं राम ने समझाया ।
हाय, विधि के लेखों से हंसता-जग रोया-पछताया । ४ ।
राम गये माया-मृग पीछे लक्ष्मण ने धोखा खाया ।
भिक्षु बन कर छलिया रावण था सीता को हर लाया । ५ ।
माया-मृग मारीच-नीच ने हरि-चरणों का ध्यान किया ।
राम-बाण से मर कर उसने अपना ही कल्याण किया । ६ ।

लौटे राम अनुज को देखा पथ में तो व्याकुल होकर ।
कुटिया में सीता न पाई लगे खोजने रो-रोकर । ७ ।
वन - वेली - विटपों - पाषाणों से फिर पूछें स्वयं सुजान ।
कहां गई है प्राण-प्रिया सीता कोई कुछ करो बखान । ८ ।
वन- चर-पक्षी-गण-निर्झर-सरिता से प्रश्न करें भगवान् ।
चर और अचर सभी चुप होकर देखें-सुनें प्रणय-परिमाण । ९ ।
सीता से बिछुड़े रघुवर ने मुखर-विरह-संचार किया ।
सती उमा ने तभी परीक्षा लेने का उपचार किया । १० ।
राम-प्रभु ने सीता बनी हुइ सती को जान लिया ।
शिव का मंगल-कुशल पूछ कर नमो नमः से मान क़िया । ११ ।
तब शंकर ने उसके भार्यावृत को अस्वीकार किया ।
सती-विरह में स्वयं उन्होंने मौनी-विधुर -विहार किया । १२ ।
आकुल-व्याकुल दोनों भाई चलते अन्वेषण करते ।
मन में भाव अनेक उभरते आंखों से आंसू झरते । १३ ।
आगे चल कर एक ओर "हे राम-राम" आवाज सुनी ।
देखा जाकर पड़ा जटायु घायल भू-पर वीर-गुणी । १४ ।
राम कृपालु ने आगे बढ़कर था उसे उठा लिया ।
सुर-मुनि-दुर्लभ स्नेह-भाव से स्वयं गोद में बिठा लिया । १५ ।
उसकी सुनी कही कुछ अपनी न्यारा था संयोग-वियोग ।
भक्त और भगवान् कर रहे थे उसका अनुभव-उपभोग । १६ ।
उसका उत्तरकर्म किया प्रभु ने वन्य-नदी के तीर ।
अग्रेसर फिर हुए खोज में सीतापति राम रघुवीर । १७ ।
शान्त-नितान्त-एकान्त-प्रान्त में कहीं-कहीं करते विश्राम ।
तन का श्रम थोड़ा मिट जाता मन का क्लेश बढ़ा अविराम । १८ ।
मुनि शरभंग और तापस-जन राम-मिलन से धन्य हुए ।
ज्ञान-भक्ति-सत्कर्मो के सिद्धान्त सफल परिगण्य हुए । १९ ।

अबला कहलाने वाली शबरी के भाग्य स्वयं जागे ।
छूत-भूत को दूर भगा कर प्रभु राम आये आगे । २० ।
पंपासर के निकट झोंपड़ी दिव्य-धाम थी उस वन में ।
प्रेम-भक्तिवश प्रभु -दर्शन पाये शबरी ने जिस क्षण में । २१ ।
भक्ति की महिमा समझाई बदरी-फल का पाथा भोग ।
शबरी को वरदान दिया मुक्ति से बढ़ कर भक्तियोग । २२ ।
जीवन-मुक्त उस वनिता के नम्र-निवेदन को सुन कर ।
ऋष्यमूक पर्वत की ओर चले अभय दो राज कुंवर । २३ ।
किष्किंधा के राजा बालि का भाई सुग्रीव स्वयम् ।
पांच पंच-सचिवों से मिलकर बहां बसा था दुखी स्वयम् । २४ ।
महाबली बालि ने उसको मार-मार कर भगा दिया ।
राज-भवन, नारी-सुख छीना दीन-हीन था बना दिया । २५ ।
वन - वीरों को आते देखा गिरिवासी सुग्रीव डरा ।
महामति और यति-व्रती श्री हनुमान् से बोल पड़ा । २६ ।
प्यारे, वेश बदल कर जाओ परखो तापस वीरों को ।
शत्रु-मित्र का दे देना संकेत यहां अधीरों को । २७ ।
विप्र - रूपधर पवनपुत्र ने देखा राम-लक्ष्मण को ।
बल-बुद्धि से समझ लिया उनके सहयोगी लक्षण को । २८ ।
स्वामी-सेवक मधुर-भाव से पूरा परिचय लिया-दिया ।
तब श्री नर-नारायण को निज-कंधों पर उठा लिया । २९ ।
ले आये सुग्रीव-निकट संकट विकट मिटाने को ।
यथासमय सहधर्मी दुखिया उनको मित्र बनाने को । ३० ।
ऋष्यमूक पर हुई मित्रता अग्निदेवता साक्षी थे ।
सीता के आभूषण देखे-परखे जो विश्वासी थे । ३१ ।
हठवादी शठ रावण को सबने अपराधी जान लिया ।
पूरा पता लगाने का मित्रों ने दृढ़ प्रण ठान लिया । ३२ ।

पहले तो सुग्रीव सखा का राघव ने उद्धार किया ।
बालि-वध से राजपाट का फिर उसको अधिकार दिया । ३३ ।
बालि को भी ज्ञान-दान-उपहार मिला था चलती वार ।
उसने निर्निमेष-नेत्रों से देखा ब्रह्म-राम-साकार । ३४ ।
अंगद को युवराज बनाया तारा को समझाया था ।
प्रभु ने था गृह-भेद मिटाया संघ-भाव सिखलाया था । ३५ ।
स्वयं प्रवर्षण-गिरि पर सारा वर्षाकाल बिताया था ।
तदनन्तर सुग्रीव-मित्र को प्रण का स्मरण कराया था । ३६ ।
वीर-धीर वानर-दल-बल ने चारों ओर किया प्रस्थान ।
दक्षिण में अंगद-नल-नील-जाम्ववान् और श्री हनुमान् । ३७ ।
सूज-बूझ से रामाज्ञा पाकर थे हर्षित सारे धीर ।
हनुमान् को दी अंगूठी थे आश्वस्त स्वयं रघुवीर । ३८ ।
जय श्री राम कहा सब ने फिर अपने पथ पर किया प्रयाण ।
गिरि-वन-पथ-संकट से जूझे और बढ़े आगे बलवान् । ३९ ।
राम-प्रभु की कार्यसिद्धि का शिव-संकल्प बनाया था ।
विघ्न-रूप राक्षस जो सम्मुख आया मार मिटाया था । ४० ।
कठिन परीक्षा हुई वहां थी जहां विराजी स्वयंप्रभा ।
विष्णुमाया उसे समझिये अथवा कहिये ज्ञान-सुधा । ४१ ।
गुप्त-गुफा में भूखे-प्यासे रामदूत कर गये प्रवेष ।
सुगम-अगम निर्माण गुफा का देखा-परखा स्वयं विशेष । ४२ ।
कहीं अंधेरा कहीं उजाला सूखा-स्थल जल-कूल कहीं ।
कहीं उजाड़ बीहड़ भूमि और फले फल-फूल कहीं । ४३ ।
घूम-घूम कर इधर उधर आपस में सोच महान् करें ।
भय और अभय भरे मन में हम अभी मरें या प्राण धरें । ४४ ।
राम-नाम का सुमिरन करने का संकट-हर काम किया ।
ज्योतिः पुंज दूर से देखा सबने उसे प्रणाम किया । ४५ ।

उचित समय पर आहट पाकर योग-समाधि से जागी ।
स्वयंप्रभा गंधर्व-सुता का मन था हरि-पद-अनुरागी । ४६ ।
स्वयं पधारे सभी अतिथियों का देवी ने मान किया ।
कारण पूछा तभी सभी ने राम-नाम-गुण-गान किया । ४७ ।
जान गई पहचान गई जो दृश्य देखती रहती थी ।
राम-कथा के सब रहस्य को स्वयं ध्यान में गहती थी । ४८ ।
इधर राम की विरहावस्था उधर सिया का विरह-क्लेश ।
दोनों से ही स्वयंप्रभा को मिलता पुनर्मिलन-संदेश । ४९ ।
हरि-कृपा से हो जाता है हरि-भक्तों का मेल जहां ।
दुर्गम-मग सब स्वयं सुगमता का बनता हैं खेल वहां । ५० ।
महातापसी स्वयंप्रभा ने हरि-चर्चा पर ध्यान दिया ।
हरिभक्तों के खान-पान का प्राकृत-विधि-विधान किया । ५१ ।
मधुर-स्वादु फल खाये सब ने सरस-विमल-जल-पान किया ।
राम-प्रभु की कृपा-दृष्टि से फिर पथ का अनुमान किया । ५२ ।
समय बड़ा था बीत गया हरि-भक्तों का उस आश्रम पर ।
स्वयंप्रभा की योग-शक्ति से जल्दी गये सिन्धु-तट पर । ५३ ।
उन्हें भेज कर लंका-दिग् में स्वयंप्रभा ने किया विचार ।
राम-प्रभु के दर्शन-हेतु उत्सुकता थी उसे अपार । ५४ ।
मर्यादा - पुरुषोत्तम राम पूर्ण - पुरुष अन्तर्यामी ।
विष्णु-भक्तिरत स्वयंप्रभा की इच्छा जान गये स्वामी । ५५ ।
"तीव्र संवेगानामासन्नः" योग सूत्र के ही अनुसार ।
"विष्णु प्रिया, संबोधन कर उसे सिखाया शास्त्राचार । ५६ ।
स्वयंप्रभा ने राम-प्रभु को गुरु-आचार्य बनाया था ।
विघ्नकारिणी ऋद्धि-सिद्धि-वृद्धि को ठुकराया था । ५७ ।
लक्ष्मण वन में गये हुए थे कन्द मूल फल लाने को ।
आकर देखा-सुना श्रेष्ठ-संवाद अमर-पद पाने को । ५८ ।

स्वयंप्रभा ने नर-नारायण की मूर्त्ति को किया प्रणाम ।
"विष्णुप्रिया, विष्णुमाया" श्री मुख से सुन कर निज-नाम । ५९ ।
हेमलता के गंधर्वोचित गुफा-भवन को त्याग दिया ।
रामाज्ञा से सुप्रसिद्ध बदरी-वन में अनुराग किया । ६० ।
योग-शक्ति के साथ प्रेम-भक्ति का अब सहचार हुआ ।
स्वयंप्रभा की सत्य-साधना में अभिनव संस्कार हुआ । ६१ ।
ज्ञानी-विज्ञानी-ध्यानी मुनियों के आश्रम थे सब ओर ।
बदरी-धाम पहुंच कर हो गई स्वयंप्रभा आनन्द विभोर । ६२ ।
जप-तप-व्रत-निष्ठा में उसकी पूर्ण-प्रतिष्ठा हुई जहां ।
ध्यान समाधि प्रेम भक्ति में प्रगति-वरिष्ठा हुई वहां । ६३ ।
इधर सिन्धु-तट गये राम के सेवक अंगद आदि वीर ।
स्वयंप्रभा के पथ-दर्शन पर किया विचार बड़ा गंभीर । ६४ ।
एक ओर फिर गिरि-गुफा से शब्द सुनाई उन्हें पड़ा ।
जरा-बद्ध और क्षुधा-क्षुब्ध था वृद्ध-गिद्ध का शब्द कड़ा । ६५ ।
सुना और फिर देखा सबने उस पक्षी का देह विशाल ।
पंजा-चोंच बड़े भयकारी विवृत-वदन बड़ा विकराल । ६६ ।
प्रबल विघ्न सम्मुख आया तो डर कर सारे कांप गये ।
अनुचितसमय नये भय को क्षण भर में प्यारे भांप गये । ६७ ।
फिर चतुराई से देखा जो समझ पड़ा आकार-प्रकार ।
तभी जटायु की स्मृति आई कहने लगे चरित्र अपार । ६८ ।
सुना जटायु भाई का शुभ नाम काम उनके मुख से ।
संपाति के नेत्र बहाने लगे नीर स्नेह-सुख से । ६९ ।
सारी कथा सुनाई उसको हरि-भक्तों ने सुख पाया ।
संपाति ने अपना कह कर उनको था पथ दिखलाया । ७० ।
उसे उठा कर ले गये सारे मुक्त-नीर सागर के तीर ।
संपाति ने मृत भाई को दिया अंजलि भर कर नीर । ७१ ।

एक दूसरे को पहचाना सन्माना जाना सुख-सार ।
तब संपाति के शरीर पर हुआ नवीनता का संचार । ७२ ।
उन सब को लंका का पता बताकर ही वह विदा हुआ ।
राम-सेवकों के मन में भी साहस बल था जुटा हुआ । ७३ ।
अपनी अपनी शक्ति का सबने था स्वयं बखान किया ।
जाम्बवान् की बुद्धिमत्ता ने फिर अनुसंधान किया । ७४ ।
शिव जी का अवतार बताकर हनुमान् को समझाया ।
राम-काज करने के प्रण को उसके मन में दुहराया । ७५ ।
सत्यं शिवं सुन्दरं सुन कर खड़े हो गये पवनकुमार ।
सबकी सन्निधि में पल भर में धारा रूप पर्वताकार । ७६ ।
पवन-वेग से वायुनंदन हुए गगन-पथ पर आरूढ़ ।
उनकी प्रत्यागमन-प्रतीक्षा में बैठे थे सहचर शूर । ७७ ।
ऋणी-गुणी मैनाक-गिरि ने सागर-लहरों से उठ कर ।
देना चाहा था विश्राम पवन-पुत्र को तब क्षण भर । ७८ ।
उसका भाव समझ कर बोले रामदूत बजरंग बली ।
राम-काज करने से पहले अन्य कामना नहीं भली । ७९ ।
आगे बढ़े तभी लहरों की सीढ़ी से कोई छाया ।
उठी दानवी-माया जैसी हनुमान् को भरमाया । ८० ।
गज को जैसे ग्राह ने पकड़ा हरि ने उसे उबारा था ।
वैसे ही इस माया-ग्रह को हनुमान् ने मारा था । ८१ ।
गिरी वारिधि में पछाड़ खाकर थी भारी निशाचरी ।
पवनपुत्र के मन जैसी सागर में फिर लहरी लहरी । ८२ ।
गये सिन्धु के पार वदन फिर सुरसा ने था बढ़ा दिया ।
बल-बुद्धि की सफल-परीक्षा हेतु उसने भला किया । ८३ ।
तब हनुमान् स्वयं संबोधित बालरूप होकर धाये ।
सुरसा-मुख से उदर-गुफा में घूम-घूम वापिस आये । ८४ ।

तब उन पर हो गई प्रसन्न सुरसा नागों की माता ।
अभय-विधायक रामदूत के लिये बन गई वर-दाता । ८५ ।
इधर उधर फिर घूमे देखा लंका वाला मुख्यद्वार ।
जहां लंकिनी निशाचरी खबरदार थी पहरेदार । ८६ ।
आहट सुनकर उसने तत्क्षण उनसे पूछा ओ भाई ।
कौन कहां से आये हो तुम यहांबुद्धि क्यों भरमाई । ८७ ।
आव-ताव न देखा फिर बजरंगी ने मुक्का मारा ।
रक्त-वमन कर गिरी राक्षसी खत्म हुआ किस्सा सारा । ८८ ।
सावधान बलवान् पवन-सुत तनिक न मन में घबराये ।
आगे बढ़े स्वयं पथ में फिर लंका के अन्दर आये । ८९ ।
दुर्गम-दुर्ग स्वर्ण की लंका बंका बाल करेगा कौन ।
द्वेष-दंभ के दर्प-सर्प से डंसा हुआ रावण था मौन । ९० ।
अणिमा-महिमा - गरिमा आदि योग-प्रक्रिया के ज्ञाता ।
श्री हनुमान् बने लघु-रूप लगे खोजने जग-माता । ९१ ।
रावण के प्रिग राज-महल में घुसे रात में बलधारी ।
यत्र तत्र सर्वत्र नींद में झूम रहे थे प्रतिहारी । ९२ ।
खा-पीकर मन मौज मना कर निद्रा-मग्न हुआ रनिवास ।
झूलेदार पलंग पर सोया रावण मन्दोदरी के पास । ९३ ।
धन-वैभव-संम्पन भवन में शोभामय था शिल्प-विकास ।
साथ-साथ ही दृग्गोचर था प्रबल काम का कला-विलास । ९४ ।
वहां न कोई रामदूत को इष्ट-वस्तु का पता चला ।
ब्राह्म-मुहूर्त हुआ तो उनको दूर कहीं संकेत मिला । ९५ ।
वह था घर साधु-स्वभाव श्रीराम के भक्त बिभीषण का ।
आंगन में तुलसी-चौरा सर्वत्र राम का नाम लिखा । ९६ ।
वहां पहुच कर शम-श्रवण कर और देख कर वैष्णव-रीत ।
विप्ररूप में पवन-पुत्र ने "जय श्रीराम" कहा सप्रीत । ९७ ।

परिचय लिया-दिया दोनों ने स्वयं निभाया शिष्टाचार ।
सीता का आवास बता कर बने विभीषण सखा उदार । ९८ ।
दिनभर गुप्त-रूप से घूमे गढ़ लंका में पवनकुमार ।
सैनिक-शिविर सुभट सब देखे और निहारे शस्त्रागार । ९९ ।
इधर-उधर के स्थल-विशेष सब देखे गुप्त-प्रकट होकर ।
रात हुई तब गये स्वयं अशोकवाटिका के अन्दर । १०० ।

* चौथा विश्राम *

सघन अशोक वृक्ष के नीचे पृथ्वी पर प्रिय-ध्यान-मगन ।
राम-प्रिया सीता को देखा सादर मन से किया नमन । १ ।
निकट-विकट-संकट की प्रतिभायें थीं बैठीं निशाचरी ।
सोच-समझ कर तरु पर बैठे पवनपुत्र फिर उसी घड़ी । २ ।
अन्तःपुर का दल-बल लेकर स्वयं वहां रावण आया ।
अपने मुख से अपनी शक्ति का उसने था गुण गाया । ३ ।
सीता ने अपने सतीत्व से उसका प्रत्याख्यान किया ।
क्षुब्ध-क्रुद्ध हो गया घमंडी हत्या का प्रविधान किया । ४ ।
मंदोदरी ने आगे आकर थाम लिया था उसका हाथ ।
जला-भुना अपना मुख लेकर लौटा रावण दल-बल साथ । ५ ।
जोर-शोर से राक्षस-नारी सीता को फिर डांट रहीं ।
सभी अभागिन होनी के वश होकर मृत्यु छांट रहीं । ६ ।
त्रिजटा सबको दूर हटाकर करने लगी स्वयं विश्राम ।
छिपे हुए तरु-शाखाओं में पवनपुत्र बोले "श्रीराम" । ७ ।

धीरे धीरे राम-कथा का अमृतरस फिर बरसाया ।
भावमग्न मन से सीता ने उसे सुना अति सुख पाया । ८ ।
संबोधन कर बोली प्यारे, कौन तपस्वी हो न्यारे ।
सम्मुख आओ मुख दिखलाओ संशय दूर करो सारे । ९ ।
राम-मुद्रिका नीचे फैंकी सीता ने देखी तत्काल ।
फिर भी उसके मन में उभरा एक अभागा शंका-जाल । १० ।
संशय छिन्न-झिन्न करने को तत्पर हुए स्वयं हनुमान् ।
सावधान होकर वाणी से करने लगे राम-गुण-गान । ११ ।
उचित समय पर रामदूत ने देर लगाई नहीं वहां ।
उतरे पृथ्वी पर सम्मुख थी बैठी सीता सभय जहां । १२ ।
हाथ जोड़ कर खड़े हुए फिर सादर शीस नवाया था ।
शुद्ध-बुद्ध अपनी वाणी से मां को धीर बंधाया था । १३ ।
सुन कर प्रभु की सेवा-भक्ति-शक्ति-वचन-कुशलताई ।
हनुमान् की स्नेही वाणी सीता जी के मन भाई । १४ ।
राम-प्रभु के प्यारे प्रेम-दुलारे कह कर जान लिया ।
अति प्रसन्न मन से सीता ने उन्हें अमर वरदान दिया । १५ ।
फिर अपनी पीड़ा की गाथा सभी सुनाई थी तत्काल ।
प्राणनाथ से कहना जाकर क्षमा करें अपराध विशाल । १६ ।
मास मात्र ही शेष रहा है यहां अमँगल होने को ।
विरहानल से नहीं बचेगा नयन-नीर मुख धोने को । १७ ।
अकथ-व्यथा की कथा सुनी फिर बोले वीर-धीर हनुमान् ।
बीत गईं दुख की घड़ियां मानो माता प्रण-वचन प्रमाण । १८ ।
समाचार पाते ही रघुवर लंका पर चढ़ आयेंगे ।
रावण-कुल का नाश करेंगे बंधन सब तुड़वायेंगे । १९ ।
प्रभु की पराशक्ति को माता तुम से बढ़ कर जाने कौन ।
पुत्र-भाव से थोड़ा कहकर मैं अब हो जाता हूं मौन । २० ।

भूख लगी है आज्ञा दें उपवन के फल खाऊं मैं ।
श्री-चरणों की सेवा-हेतु प्रभु-चरणों में जाऊं मैं । २१ ।
आज्ञा दी सीता ने देखे पवन-पुत्र ने फल सुन्दर ।
मधुर-स्वादु-रस भरे तोड़ कर खाये स्वयं पेट भर कर । २२ ।
निशाकाल था फिर भी आहट सुन कर वन-रक्षक आये ।
वायुनंदन के घूसों-लातों से मरे और धाये । २३ ।
भोर हुई तो सुनी पुकार भड़क पड़ा रावण-दरबार ।
गया पकड़ने रामदूत को रावण-पुत्र अक्षयकुमार । २४ ।
उखड़े पड़े बड़े पेड़ का महावीर ने किया प्रहार ।
रावण-सुत हो गया खेत जैसे खेतों में पशु-शिकार । २५ ।
कड़ी रपट सुन पड़ी बड़ी चिन्ता रावण की बढ़ी-चढ़ी ।
मेघनाद को भेजा उस पर बजरंगी की नजर पड़ी । २६ ।
दाव-पेंच से हार गया तो ब्रह्मपाश की युक्ति बड़ी ।
उसने बंदी रामदूत फिर स्वयं बंध गये उसी घड़ी । २७ ।
बंदी बन कर देखा जाकर क्रोधी रावण का दरबार ।
प्रश्नोत्तर से स्पष्ट सुनाया राम-प्रभु का वचन उदार । २८ ।
चंचल चापलूस दरबारी लोगों से था घिरा हुआ ।
रावण का अपना मस्तक भी काल-कोप से फिरा हुआ । २९ ।
वध करने की आज्ञा दी तब भक्त बिभीषण बोले थे ।
राजनीति के नियम सभा में सब के मुंह पर खोले थे । ३० ।
बजरंगी की पूंछ को आग रावण ने लगवाई थी ।
हनुमान् ने उसी आग से लंकापुरी जलाई थी । ३१ ।
धूं-धूं करती जली स्वर्ण की लंका हो गई स्वाहाकार ।
त्राहि त्राहि मची वहां सब ओर हुई फिर हाहाकार । ३२ ।
एक अशोक वाटिका दूजा भक्त बिभीषण का आवास ।
स्वस्थ रहे उन पर न कोई हुआ अग्नि का कोप-विलास । ३३ ।

राम-भक्ति से रुद्र-शक्ति का हुआ प्रदर्शन लंका में ।
पवनपुत्र के भय से राक्षस-कुल थे जीवन-शंका में । ३
पूंछ बुझाई सागर में फिर सीता का संदेश लिया ।
लौट पड़े हनुमान् कुशलता से प्रभु-कार्य विशेष किया । ३५ ।
सागर लांघा अपने दल से मिले खुले दिल से बलवीर ।
हर्षित होकर चले सभी श्रीरामाश्रम की ओर सुधीर । ३६ ।
मधुवन में आकर सबने फिर किया स्वादु-फल-मधु-रस-पान ।
कार्य-सिद्धि सुग्रीव जान कर गये राम के निकट सुजान । ३७ ।
आज्ञा पाते ही रघुवर के सेवक आ पहुंचे मतिमान् ।
जाम्बवान् नल-नील-अंगद सफलकाम थे श्री हनुमान् । ३८ ।
पवनपुत्र ने शीस नवा कर यात्रा-कथा सुनाई थी ।
चूड़ामणि देकर श्री प्रभु को तत्परता दिखलाई थी । ३९ ।
आत्मविभोर हुए रघुवर ने शिव-संकल्प किया मन में ।
अब क्षण भर की देर नहीं मैं सह सकता हूं जीवन में । ४० ।
हनुमान् को गले लगाकर करुणाकर ने किया बखान ।
ऋणी बना हूं सदा तुम्हारा सत्य-सखा तुम प्राण समान । ४१ ।
इतना सुनकर प्रभु-चरणों पर शीस नवा कर प्रिय हनुमान् ।
ध्यान-मग्न शिव के स्वरूप में अन्तर्मुखी हुए गुणवान् । ४२ ।
अन्य न कोई जान सका हरि-हर की लीला अपरंपार ।
यहां राम और वहां मौन शिव तभी शिवा हो गई लाचार । ४३ ।
प्रश्न किया शिव ने समझाया उसे स्वयं अनुभव स्वच्छन्द ।
राम-प्रभु की चरण-धूलि से धन्य भाल था मन सानन्द । ४४ ।
शिव-हरे, शिव-राम-सखे, प्रभो, तापहर, विभो, हरे ।
सुनकर आपस की महिमा को शिव-राघव के नयन भरे । ४५ ।
देखा-सुना सती फिर खो गई राम-ध्यान-सुख-सागर में ।
राम और शिवजी की भावुक बात हुई मध्यान्तर में । ४६ ।

हरि-हर की वह गुप्त-मंत्रणा लंका-यात्रा के अनुसार ।
सहज हुई संपन्न जहां जिसके माध्यम थे पवनकुमार । ४७ ।
शारद-नवरात्रों की विजयादशमी आई सुखदाई ।
सर्वसमर्थ त्रिलोकपति रणधीर राम के मन-भाई । ४८ ।
नर-वानर की दो संस्कृतियों का मानवता के आधार ।
संघ बना कर चले वीर करने दानवता का संहार । ४९ ।
युगानुसारी बने देवता राम-प्रभु के सेवादार ।
विविध-रूप बहु-वेश धार कर समर-हेतु हो गये तैयार । ५० ।
विजय-मार्ग पर चले वीरवर दल-बल रचकर व्यूहाकार ।
जय रणचंडी, जय हर हर, जय राम, गूंजती जय-जयकार । ५१ ।
सागर पर जाकर रघुवर ने मार्ग-दान-सन्देश कहा ।
अनजाने था किया विलंब सिन्धु ने फिर क्लेश सहा । ५२ ।
राम-बाण-संधान देख कर थर थर कांप उठा सागर ।
शरणार्थी का रूप धार कर शरणागत बोला सादर । ५३ ।
राम रमापति क्षमा करें जो मुझ से अपराध हुआ ।
सेतु बांध कर सुख से लांघें जल-पथ है निर्बाध हुआ । ५४ ।
यथाकाल वीरोचितक्रम से होंने लगा सेतु-निर्माण ।
शिल्पी कुशल सकल प्रभु-सेवक लगे जुटाने दृढ़ पाषाण । ५५ ।
शंकर की प्रसन्नता हेतु किया राम ने सुखद-विचार ।
ज्योतिर्लिग शंभु का प्रस्थापित करवाया विधि-अनुसार । ५६ ।
सेतुबंध श्री रामेश्वर का नाम रहस्यभरा सुन्दर ।
राम के ईश्वर अथवा राम स्वयं सदा जिसके ईश्वर । ५७ ।
आशुतोष हर का प्रसाद-वर राम धनुर्धर ने पाया ।
मन ही मन शुभ लक्षण जाना निष्कंटक-पथ अपनाया । ५८ ।
गये पार सेना को लेकर सबके पार-उतारनहार ।
बालाधर पीड़ाहर प्रभुवर राम स्वयं विष्णु-अवतार । ५९ ।

दल-बल-सकल-सफल परिश्रम से सेतु-बंध पर उतराया ।
नल-धवल-जलधि-लहरों को लांघा फिर भूतल पाया । ६० ।
बनी योजना रणरंगी श्रीराम-शिविर में क्रमानुसार ।
वज्ररंगी की अनुभूति पर योधाओं ने किया विचार । ६१ ।
उधर दशानन के दरबारी-सरदारों की सभा लगी ।
सबकी उल्टी सम्मति से राय न मिली बिभीषण की । ६२ ।
शठशील मलीन-मति रावण को सबने बहकाया ।
अनुज बिभीषण पर ही उनका सारा क्रोध उभर आया । ६३ ।
होनहार के वश में आकर किया बिभीषण का अपमान ।
लात मार कर सभा मध्य रावण ने दर्शाया अभिमान । ६४ ।
देश-निकाला देकर उसको लंकापुर से दिया निकाल ।
शरणापन्न बिभीषण को तब अपनाया प्रभु ने तत्काल । ६५ ।
लंकापति का तिलक लगा कर दर्शाई प्रभुता भारी ।
धन्य धन्य की ध्वनियों से थी गूंजी राम-सभा सारी । ६६ ।
एक बार फिर राम-कृपालु ने उदारता दिखलाई ।
अंगद को भेजा लंका में समझाई सब चतुराई । ६७ ।
प्रजा-हितों की खातिर जैसे भक्त-बिभीषण आया था ।
बार बार श्रीराम प्रभु ने वही कर्म सिखलाया था । ६८ ।
बलशाली वालि का बेटा वीर बांकुरा राजकुंवर ।
अंगद प्रभु की आज्ञा से जा पहुंचा लंका के अन्दर । ६९ ।
उसे देखते रखवारों के दल-बल हो गये भयभीत ।
रोक-टोक करने वालों की अपनी शक्ति हुई विपरीत । ७० ।
वीर - धीर - गंभीर युवा रामदूत अंगद मतिमान् ।
पथ-दर्शक-सेवकों द्वारा पहुंचा सभा मध्य गतिमान् । ७१ ।
अट्टहास करते रावण ने मानो था सत्कार किया ।
अंगद ने सब ओर देख कर निर्भय था प्रतिकार किया । ७२ ।

स्पष्ट-भाव से प्रभु का शुभ-सन्देश सुनाया रावण को ।
हाय, भाग्य के फिर जाने से बुरा लगा उस दुर्जन को । ७३ ।
हनुमान् से डरा हुआ वह अंगद पर भी क्रुद्ध हुआ ।
शक्ति-प्रदर्शन हेतु अंगद सभामध्य अवरुद्ध हुआ । ७४ ।
पांव जमा कर पृथ्वी पर बोला, जो इसे हटायेगा ।
वही काल के मुख से अब लंका को पलटायेगा । ७५ ।
उठे दैत्य बलवीर उठाया गया किसी से नहीं चरण ।
जाना-माना-पहचाना अंगद ने सब का शीघ्र मरण । ७६ ।
रावण लगा चरण को छूने तब अंगद के समझाया ।
राम-चरण की शरण पड़ो अन्यथा काल तेरा आया । ७७ ।
वाद-विवाद करो मत अब तुम सीता जी को लौटाओ ।
राम-कोप से अपने साथ सारे कुल को रख पाओ । ७८ ।
अंगद की यह सीख सुनी जल-भुन कर बोल पड़ा दशशीस ।
बंद करो बड़बोले मुंह को अरे बांवरे कायर कीश । ७९ ।
धमक-दमक-धमकी रावण की सुनी, नहीं अंगद डोला ।
देकर समर-निमंत्रण सबको "जय श्री राम" स्वयं बोला । ८० ।
लौट पड़ा उत्साह बढ़ा रण में जौहर दिखलाने का ।
राम-काज के लिये स्वयं अपना सर्वस्व लुटाने का । ८१ ।
राम-प्रभु के सभी उपाय वृथा हठी ने ठुकराये ।
रावण-कुल पर तभी कुमंगलकारी प्रलय-मेघ छाये । ८२ ।
हुआ विधाता वाम करे संत्राण कौन किसका कैसे ।
करे कुपथ्यभोग जो रोगी नहीं नहीं बचता जैसे । ८३ ।
आया राम-सभा में अंगद और सुनाया सब संवाद ।
समय जान कर समुचित समझा राम-प्रभु ने अरि-प्रतिवाद । ८४ ।
रणभेरी बज उठी दुन्दुभि-शब्द हुआ घनघोर बड़ा ।
लंका गढ़ के पास जुझारू-मारू-रण का शोर बढ़ा । ८५ ।

चारों द्वारों पर रघुवर के वीरों ने घेरा डाला ।
हक्का-बक्का हुआ दशानन भूली उसे रंग शाला । ८६ ।
भगदड़ मची वहां पल भर में राक्षस-कुल अकुलाये थे ।
बंदी बने देव-ऋषि-मुनि-वर सारे अति हर्षाये थे । ८७ ।
कहां हारने वाला था रावण संहारे बिना कभी ।
उसके उद्भट-भट-राक्षस नर-वानर-दल से भिड़े सभी । ८८ ।
राक्षस केवल थल पर वानर नभ पर भी उड़ जाते थे ।
प्रखर-नखों से शिखर-फाड़ कर कंचन-कलश गिराते थे । ८९ ।
सम-दुहाई इधर और थी उधर दुहाई रावण की ।
युद्ध-विरुद्ध-क्रुद्ध-वीरों से भरी धरा समरांगण की । ९० ।
हनुमान-सुग्रीव और नल-नील राम-सेना-सरदार ।
राक्षस-कुल के मुखियों पर थे स्वयं कर रहे कठिन प्रहार । ९१ ।
दिन भर लड़ते-भिड़ते रात पड़े पर करते युद्ध विराम ।
कभी इधर तो कभी उधर सुखकर होता रण का परिणाम । ९२ ।
सर्वेक्षण से देखा जाता हार-जीत का विषय-विशेष ।
लंका की हानि होती थी बड़ी, लाभ था केवल क्लेश । ९३ ।
साधारण योधा अनगिन थे घायल-मृतक हुए रण में ।
लक्ष्मण-मेघनाद का अद्भुत था टकराव रणांगण में । ९४ ।
एक बार घननाद हुआ मूर्छित रण में लक्ष्मण द्वारा ।
राक्षस-दल में मची खलबली मूर्छित वीर नहीं हारा । ९५ ।
तीव्र-वेग से पुनः दूसरे दिन उसने संचार किया ।
वर से मिली इन्द्र-शक्ति का शस्त्र विशेष प्रहार किया । ९६ ।
लगी इन्द्र की शक्ति वीरवर लक्ष्मण बे-सुध हुए वहां ।
खबर मिली हनुमान् उठा कर ले गये थे श्रीराम जहां । ९७ ।
वक्षः स्थल पर तीव्रघात से मूर्छित लक्ष्मण को देखा ।
दल-बल सहित हुई अति व्याकुल राम-प्रभु की मुख-रेखा । ९८ ।

समयोचित सत्परामर्श था दिया विभीषण ने तत्काल ।
वैद्य सुषेण लिवाने हेतु दौड़े गये अंजनी लाल । ९९ ।
आये वैद्यवर कहा, चाहिये संजीवनी अमोघ-लता ।
खंड उठा कर ले आये थे पवन-पुत्र द्रोणाचल का । १०० ।

* पाचवां विश्राम *

जाते समय उन्हें पथ में था कालनेमि ने भरमाया ।
रामदूत ने कपट-मुनि को मारा, यमपुर पहुँचाया । १ ।
ज्योतिष्मती वनस्पति को वैद्यराज ने पिसवाया ।
उसकी दिव्य-सरस-सुरभि से हृदय सभी का सरसाया । २ ।
पिला दिया रस लक्ष्मण को छाती पर कल्क लगा दिया ।
आयुर्वेद-अमरविद्या से उसे मृत्यु से बचा लिया । ३ ।
मूर्छा से जागे तो उनके मुख से वीर-ध्वनि निकली ।
कहां गया रावण का बेटा मेघनाद अब छली-बली । ४ ।
श्री लक्ष्मण शेषावतार की वीरोचित वाणी सुन कर ।
राम-शिविर में पुनः वीरता की लहराई नई लहर । ५ ।
रात गई आया प्रभात फिर वीर जुटे समरांगण में ।
मेघनाद को छका-छका कर मारा लक्ष्मण ने रण में । ६ ।
उसकी मृत्यु से रावण का दिल कठोर भी डोल उठा ।
गुम-सुम रहा, धीरता खोई, बुद्धि-भ्रष्ट फिर बोल उठा । ७ ।
ओ मेरे वीरो, मत डरो, लड़ो शत्रु से धीर धरो ।
सत्यानाशी-वनवासी-दल में छल-बल गंभीर करो । ८ ।
उसके कहने पर फिर लंका के राक्षस-योधा मचले ।
राम-स्मरण करते-करते सब मायापति की ओर चले । ९ ।

अपने दल-बल का रावण ने आधा भाग मरा जाना ।
कुंभकर्ण की निद्रा-भंग करने का उद्यम ठाना । १० ।
नींद-अवधि छः मास नहीं थी उसकी पूरी हो पाई ।
रावण के भय-क्रोध और दुर्बोध-हेतु जागा भाई । ११ ।
व्यथा-कथा सब सुनी प्रथा से बिगड़ी दशा को पहचाना ।
उसका शुभ-उपदेश नहीं क्रोधी रावण ने सन्माना । १२ ।
उग्रवाद के तीव्रनाद से कुंभकर्ण को धमकाया ।
उधर बिभीषण गया इधर तू स्वार्थ भाव से ललचाया । १३ ।
मर्मघात की बात सुनी सिर पर थी मृत्यु-घटा काली ।
कुंभकर्ण घनघोर-गर्जना करने लगा मरणशाली । १४ ।
अंधड़ जैसा दौड़ पड़ा किया भयंकर अपना वेश ।
राम-लक्ष्मण कहां छिपे हैं कह कर रण में किया प्रवेश । १५ ।
उसने स्मरण किया दोनों का तब दोनों सम्मुख आये ।
अपने अपने दल-बल के फिर सारे वीर स्वयं धाये । १६ ।
गर्जन-वर्जन - तर्जन - मर्दन बड़ा तुमुल संग्राम हुआ ।
राम-बाण से कुंभकर्ण का मृत्युमुखी परिणाम हुआ । १७ ।
हाय, हाय कह कर उठ भागे रावण-दल के दनुज-अधीर ।
कुंभकर्ण के भीषण शव को खींचें-नाचें वानर-वीर । १८ ।
अब तो अति हो गई मगर फिर भी रावण को होश नहीं ।
कुल नारी मंदोदरी भी रोक सकी कुछ जोश नहीं । १९ ।
अर्ध-निशा में तंत्र-प्रक्रिया से रावण ने ध्यान किया ।
आकर्षित अहिरावण आया रावण को सम्मान दिया । २० ।
पल में कुल की कलह-कथा का सकल विफल परिणाम सुना ।
सावधान हो गया मगर फिर रावण-क्रुद्ध महान् गुना । २१ ।
आज्ञा मानी मन में ठानी माया का आवरण किया ।
बना बिभीषण राम-शिविर में गया गुप्त संचरण किया । २२ ।

द्वारपाल प्रणपाल पवनसुत को छलिया ने भरमाया ।
राम और लक्ष्मण को मोहित किया स्वयं फिर हर लाया । २३ ।
गया स्वयं पाताल भवन में देवी-पूजा रची जहां ।
तामस-पूजा में बलि देने की कुभावना जँची वहां । २४ ।
राम-शिविर में मचा तहलका कहां गये दोनों भाई ।
तभी विभीषण और पवनसुत ने दुघटना समझाई । २५ ।
रावण का भाई अहिरावण तांत्रिक - मायाधारी है ।
अपनी मायावी-युक्ति से वह जल-थल-नभचारी है । २६ ।
सुनी विभीषन की वाणी तैयार हुए संकटहारी ।
हनुमान् राक्षस - पिशाच - वैताल - वंश- ध्वंसकारी । २७ ।
अहिरावणपुर में जाकर देवी के स्थल पर खड़े हुए ।
अन्धकार जैसे दैत्यों के मुँह पर परदे पड़े हुए । २८ ।
ठाट-बाट से अहिरावण ने बलिपूजा-अभिचार किया ।
खड्ग उठाया आगे बढ़ा देवी ने चीत्कार किया । २९ ।
रुद्ररूप हनुमान् उछल कर कूद पड़े अहिरावण पर ।
उसका खड्ग उसी पर मारा मार गिराया महा-असुर । ३० ।
डर कर उसके अनुचर सारे भागे फिर भी संहारे ।
बजरंगी ने तान-तान कर लात और घूंसे मारे । ३१ ।
राम और लक्ष्मण की सुदृष्टि के प्रिय-संकेतों पर ।
ऋष्यमूक गिरि-पथ के सदृश उन्हें उठाया कंधों पर । ३२ ।
पवनवेग से चले पवन सुत आये अपने दल-बल में ।
मंगल-कुशल देखकर सारे सहचर सुखी हुए पल में । ३३ ।
उस दिन समर-भूमि पर रावण का दल-बल था शिथिल हुआ ।
प्रमुख-वीर उसके सारे मर गये दशानन विफल हुआ । ३४ ।
आधी रात गया वह अपने गुप्त-महल में अभिमानी ।
अपने को बहुरूप बनाने की युक्ति की मनमानी । ३५ ।

असफल हुआ मनोरथ उसका खबर राम ने पाई थी ।
अपने गुप्त-वीरदल द्वारा ही बाधा पहुंचाई थी । ३६ ।
अन्त अकेला दुखी हुआ वह सुख की वेला बीत गई ।
अपने पर ही उसे घृणा की दीख पड़ी थी रीत नई । ३७ ।
सोचा है धिक्कार मुझे जो मेरा है कोई वैरी ।
वह भी साधारण वनवासी जिसने है लंका घेरी । ३८ ।
ऐसा जीना भी क्या जीना मेघनाद ने किया है क्या ।
जागा कुंभकर्ण उसने भी हाय, लाभ दिया है क्या । ३९ ।
खर-दूषण-त्रिशिरा आदि सब दण्डक वन में हार गये ।
मरे, गये यमपुर में और विभीषण रिपु के द्वार गये । ४० ।
देव-धाम जो स्वर्ग-ग्राम था बीस भुजाओं से लूटा ।
उन्हीं भुजाओं का बल छूटा मस्तक फूटा दिल टूटा । ४१ ।
इसी तरह फिर सोच सोचते और जागते बीती रात ।
माथा ठनका आया रण का सम्मुख उसके वीर-प्रभात । ४२ ।
युद्ध यज्ञ में पूर्णाहुति देने की उसने चाल चली ।
दिग्गज की चिंघाड़-तुल्य हुंकार भरी फिर चला बली । ४३ ।
आज किया उसने जीवन भर का भीषणतम रण-शृंगार ।
अस्त्र-शस्त्र सब कवच पहन कर अपने रथ पर हुआ सवार । ४४ ।
सच कहते हैं कहने वाले नभ और सागर स्वयं प्रमाण ।
राम और रावण का रण था उनके अपने रूप-समान । ४५ ।
"सत्यमेवजयते" शक्ति से अन्त राम की की जीत हुई ।
स्वयं जानकी जान की प्यासी रावण के विपरीत हुई । ४६ ।
"मरणान्तानि वैराणि" यह रीति राम ने अपनाई ।
सब अधिकार बिभीषण को देकर कुल-नीति समझाई । ४७ ।
उत्तरकर्म किया रावण का उसने प्रभु-आज्ञा-अनुसार ।
तदनन्तर सिंहासन पर बैठा फिर लगा नया दरबार । ४८ ।

समाचार सीता ने पाया सब अनुकूल हुआ परिणाम ।
प्रभु के मन को वह जाने और उसके मन को जाने राम । ४९ ।
शिष्टाचार समय अनुसार प्रभु ने फिर दर्शाया था ।
अपने इष्ट-मित्र-गण द्वारा सद्-व्यवहार चलाया था । ५० ।
अपनी नर-लीला से अग्नि में ही जिसे छिपाया था ।
उसी सती सीता को अग्निपरीक्षा से प्रकटाया था । ५१ ।
स्वागत-अभिनन्दन के आयोजन से उसे बुलाया था ।
आई राम-समीप मही ने सीता को समझाया था । ५२ ।
जय जय सीताराम रमापति जय जय समर विजेताराम ।
जयकारों से गूंजे पल में जल-थल-नभ के स्थल अविराम । ५३ ।
शंकाहीन चला लंका में भक्त-विभीषण का शासन ।
राम-प्रभु की कृपादृष्टि से प्रजा मान गई अनुशासन । ५४ ।
स्वल्प-समय अवशेष रहा था चौदह वर्ष पुराने में ।
राम-हृदय में उथल-पुथल थी भरत-हेतु घर जाने में । ५५ ।
व्योमयान पुष्पक महान् तैयार हुआ जल्दी-जल्दी ।
राम सखामंडल को लेकर बैठे उसको आज्ञा दी । ५६ ।
वह था सर्वतंत्र स्वतंत्र यंत्रयान भी मंत्राधीन ।
यथाकाल स्वामी के हित में उड़ता-रुकता था सुखलीन । ५७ ।
यथाकाल पथ के विश्राम-केन्द्र प्रभु ने दिखलाये ।
सीता को वनवास-विरह के सारे अनुभव समझाये । ५८ ।
एक बार बरबस श्री हरि ने पुष्पक स्वयं उतारा था ।
किष्किधा-वन-गिरि-शिखरों पर भक्ति-भाव स्वीकारा था । ५९ ।
महावीर हनुमान् बली की जननी चिर-अभिलाषी थी ।
महातापसी अंजनी-माता राम-मिलन की प्यासी थी । ६० ।
अद्भुत साक्षात्कार हुआ सत्कार हुआ सहचार हुआ ।
अनुरक्ति-भक्ति-शक्ति का स्नेह-मधुर संचार हुआ । ६१ ।

मौत-मनस्वी-मन थे सबके नयन-अचंचल, मति-गंभीर ।
सिद्ध-साधना-सिद्धि-समीर आ पहुँचा सुख-सागर-तीर । ६२ ।
लंका-यात्रा पर जो शिक्षा पिता केशरी से पाई ।
वही अवध-यात्रा पर अब थी अंजनी-मां ने दुहराई । ६३ ।
राम-चरण-अनुरागी बड़भागी फिर धन्य हुए हनुमान् ।
माता की पद-रज माथे पर धारण कर माना कल्याण । ६४ ।
उड़ा विमान पुनः आगे अब अवधपुरी में जाना था ।
भरत और शत्रुघ्न आदि का प्रण पूरा करवाना था । ६५ ।
अपनी सीमा की भूमि पर नंदी-ग्राम से थोड़ी दूर ।
उतर पड़े भगवान् स्वयं मर्यादा दर्शाई भरपूर । ६६ ।
पवनपुत्र के द्वारा अपना समाचार भिजवाया था ।
भरत-कुटी में जा कर उसने शिष्टाचार निभाया था । ६७ ।
विजयी राम अयोध्या में वनवास भोग कर आये हैं ।
उनके आने से सब ओर मंगल-शकुन सुहाये हैं । ६८ ।
हनुमान् के वचनामृत से भरत हुए कृतकृत्य स्वयम् ।
समाचार सब को सुनवाया दौड़े उनके भृत्य स्वयम् । ६९ ।
जटामुकुटधारी चारों भाई थे वहां मिले ऐसे ।
तनधारी चारों वेदों के गुप्त-रहस्य खुले जैसे । ७० ।
गुरुजन-परिजन-पुरजन सारे स्वयं पधारे थे सुनकर ।
प्रथम विदाई अब स्वागत में भाव-मग्न थे नारी-नर । ७१ ।
पाप-ताप-संताप मिटाने वाला राम-भरत-संयोग ।
सब ने देखा और सराहा प्राणवान्-प्रण का उद्योग । ७२ ।
किया निरीक्षण सिंहासन का वहां पांवरीं पड़ी हुई ।
शोकविमोचन प्रभु की आंखें स्नेह-नीर से भरी हुईं । ७३ ।
कौन सराहे भरत-भाल को जो भूपाल निरभिमानी ।
राम-पादुका-सेवक बन कर प्रथा-निभाई कल्याणी । ७४ ।

मंगल-शकुन देखते सुनते राम गये भवनों की ओर ।
माताएं थीं कामधेनुसम-वत्स-मिलन-आनन्द-विभोर । ७५ ।
कैकेयी-कौशल्या और सुमित्रा जी के चरण छुए ।
राम-सीता-लक्ष्मण ने फिर वहां मंगला-चरण हुए । ७६ ।
रामचरित की मूक देवियां जप-तप की तस्वीर स्वयम् ।
वीर-उर्मिला, धीर-मॉडवी, श्रुतकीर्ति गंगीर स्वयम् । ७७ ।
सर्वमंगला सीता जी को गले मिलीं आगे आकर ।
राम-प्रभु के चरण छुए आशीष मिली सौभाग्य-अमर । ७८ ।
कैसा था वह दृश्य अनोखा उसको जाने वही सुजान ।
सुख-दुख में जन-मंगलकारी जिस पर कृपा करें भगवान् । ७९ ।
आज मंथरा का किसी ने वहां न साक्षात्कार किया ।
संभव है उसने पछता कर मुक्तिघात स्वीकार किया । ८० ।
कुछ लोगों का कहना है शूर्पनखा और मंथरा ।
दोनों की समकालिक है जन्म-मरण की व्यथा-कथा । ८१ ।
सुख के सारे शुभ-लक्ष्मण अब अवध पुरी में उदित हुए ।
राजा राम बनें आदर से प्रजावर्ग अतिमुदित हुए । ८२ ।
राजा राम जानकी रानी बनें यही था प्रण धारा ।
कुलाचार सत्ताधिकार को था दशरथ ने स्वीकारा । ८३ ।
विघ्न पड़ा था क़ड़ा बड़ा जो राम हुए वनवासी थे ।
भरत स्वयं उनके वियोग से घर में परम-उदासी थे । ८४ ।
विघ्न टला संयोग मिला अब सहज सकल-मंगलकारी ।
राजतिलक की शुरू हुई शास्त्रानुसार चर्चा सारी । ८५ ।
गुरु वशिष्ठ जी ने विधिपूर्वक सारा किया प्रबंध-विधान ।
मंगलमूल राम का राज्यारोहण-दिन था महामहान् । ८६ ।
वैदिक विधि से दान-मान यज्ञानुष्ठान हुआ सुन्दर ।
ज्येष्ठ-श्रेष्ठ-आचार्य उपस्थित हुए वहां थे ऋषि-मुनिवर । ८७ ।

सुरपूजा भू-सुरपूजा का आकर्षक आयोजन एक ।
गो-हय-हाथी स्वर्ण-रजत हीरा-मोती वर-रत्न अनेक । ८८ ।
विविध-भोग-नैवेद्य और फिर वस्त्राभूषण पा-पाकर ।
अधिकारी कर्मीजन सारे सुप्रसन्न थे आ-जाकर । ८९ ।
गायक-वादक-नृत्य-विधायक सब ने शोभा पाई थी ।
दिग्दिगन्त में वाद्य-वृन्द की स्वर-लहरी लहराई थी । ९० ।
त्रिभुवन में गूंजी जयकार धन्य अयोध्या पावनधाम ।
राजनगर भारत का सुन्दर जहां विराजें राजा राम । ९१ ।
सकल-नवल-मंगल के दाता स्वामी प्रजाप्राण रघुनाथ ।
पूर्णकाम सिंहासन पर बैठे प्रभु गुण-गौरव के साथ । ९२ ।
नित्य-नवीन-प्रवीण-महोत्सव राज-काज-हित करें उदार ।
धर्म-नीति की कुशल-कला से था परिपूर्ण राम-दरबार । ९३ ।
वर्णाश्रम के साधिकार सब चलें न्यायपथ के अनुकूल ।
दैविक-भौतिक-दैहिक दुख के मिटे सदा थे सारे शूल । ९४ ।
कौन किसी से करे याचना याचकभाव छुड़ाया था ।
रामराज में हर प्राणी ने स्वाधिकार को पाया था । ९५ ।
सुन्दर भाईचारा प्यारा न्यारा देखें सखा उदार ।
रांजतिलक पर आये थे जो सारे परखें शिष्टाचार । ९६ ।
अवध राज्य में देख-देख कर सहज एकता का संचार ।
सबको अपने बन्धु-काण्ड पर करना पड़ा अतीत-विचार । ९७ ।
उचित समय पर रामराज की निपुण नीति का शिक्षा-सार ।
पाया प्रभु की आज्ञा पाकर विदा हुए प्रिय-सखा-उदार । ९८ ।
दास - अंश - साक्षात् स्वयं परब्रह्ममय - एकाकार ।
श्री हनुमान् टिके चरणों में कर्म-भक्ति-ज्ञानात्मविचार । ९९ ।
सदाकाल प्रभु-आज्ञाकारी गुणधारी सेवक मतिमान् ।
प्रभु-चरणों की सेवा में ही रहे निरन्तर प्रिय हनुमान् । १०० ।

* छठा विश्राम *

रामराज की चर्चा-परिचर्चा सब ओर चली तत्काल ।
मणिप्रभा गंधर्वलोक में रत्नाकर से करे सवाल । १ ।
रत्नाकर फिर मणिप्रभा के साथ अवध में आया था ।
जानें राम निमंत्रण किसने कब उनको भिजवाया था । २ ।
त्रेतायुग में सत्य नाम साकेतधाम परिपूर्ण काम ।
धन्य अयोध्या अवधपुरी थी जहां बसे श्री सीता-राम । ३ ।
विश्वपति रामावतार में करें सनातन प्रमुख-विधान ।
गुप्त-प्रकट भावों से सबको शिक्षा देते दयानिधान । ४ ।
हरि-भक्ति-प्रभाव से ही संकेत मिलें साधक जिनको ।
विघ्न-हरण पथ-दर्शन के उपदेश मिलें नर-जीवन को । ५ ।
अवध पति के दर्शन से गंधर्व-सुजन थे बने सुजान ।
उनके मन में सहसा आया पुत्री स्वयंप्रभा का ध्यान । ६ ।
रामेच्छा से प्रेरित होकर सुन्दर आशा को लेकर ।
तीर्थ भूमि यात्रा पथ पर फिर दोनों हो गये अग्रेसर । ७ ।
सीता राम - गुणग्राम से पुण्यारण्य - विहार किया ।
ऋषि-मुनि-आश्रम पर जाकर दर्शन-भाषण-उपहार लिया । ८ ।

सेतुबंध - रामेश्वर - दर्शन से अन्तर्मन - शोध हुआ ।
आशुतोष अभयंकर शंकर की करुणा का बोध हुआ । ९ ।
स्तुति-नुति-भक्ति-भाव-गीत को मुक्त कंठ से गाया था ।
समयोचित संकेत स्वयं श्री नीलकंठ से पाया था । १० ।
सजल-नयन पुलकित-तन-मन से रामेश्वर को किया प्रणाम ।
मणिप्रभा-रत्नाकर ने रत्नाकर-तीर लिया विश्राम । ११ ।
अब सूना था स्वयंप्रभा का पहले वाला गुफा-भवन ।
मय-दानव ने जिसे बनाया हेमलता के हित-कारण । १२ ।
रत्नाकर-सागर ने मणिप्रभा और रत्नाकर का ।
भाव जानकर सत्य सुनाया जो नारद को रुचिकर था । १३ ।
नारायण के अन्तर्मन-नारद से शिक्षा पायेगी ।
स्वयंप्रभा बदरी-आश्रम से मणिपर्वत पर आयेगी । १४ ।
पुण्यकर्म से हो तुम दोनों स्वयंप्रभा के मात-पिता ।
उससे पहले उस पर्वत पर जाकर सुख से रहो सदा । १५ ।
"सूर्यकुण्ड" को अपना सुन्दर आश्रम स्वयं बना लेना ।
सुविधा से जीवन के साधन वन-देवी से पा लेना । १६ ।
स्वयंप्रभा के लिये बनी है सजल-गुफा मणिपर्वत में ।
सुर-शिल्पी श्री विश्वकर्म ने उसे बनाया सुर-हित में । १७ ।
वहां साधना स्वयंप्रभा की सकल सफल हो जायेगी ।
विष्णुप्रिया विष्णुदर्शन कर उन्हें स्वयं वर पायेगी । १८ ।
श्री विष्णु भगवान् प्रपन्ना-भक्ति को सफलायेंगे ।
श्री लक्ष्मी की प्रतिमा स्वयंप्रभा को फिर अपनायेंगे । १९ ।
राम-कृपा से इतना ही समझा कर रत्नाकर-सागर ।
नराकार से नीराकार हुआ स्वयं फिर लहरा कर । २० ।
रत्नाकर-सागर से सुन कर भावि-योजना जीवन की ।
उन दोनों ने मानी महिमा अपनी पुत्री के प्रण की । २१ ।

तब गंधर्वालय पर जाना छोड़ दिया मुख मोड़ लिया ।
मणिपर्वत्र के सूर्यकुण्ड के साथ स्वयं मन जोड़ दिया । २२ ।
उनके आने से गिरि-वन में फिर से आई नई बहार ।
शान्त और एकान्त प्रान्त में था नितान्त सुख भरा अपार । २३ ।
लगा बीतने काल तपस्या में जीवन-सुख पाने का ।
राम चरित साकार बना सद्गुरु था पथ दिखलाने का । २४ ।
रामराज की तुलना में कोई शासन है और कहां ।
राजा पिता, प्रजा संतानों की भान्ति सब रहें जहां । २५ ।
फिर भी इस दोरंगी दुनिया की हर चाल निराली है ।
उद्घाटन के साथ-साथ की दुर्घटना दुखवाली हैं । २६ ।
प्रजापाल श्री राघवेन्द्र ने प्रजाहितों का पूरा ध्यान ।
रक्खा था कुछ समय बीतने पर सुन लिया दुखद-आख्यान । २७ ।
धोबी-धोबिन घर के अन्दर ही आपस में झगड़े थे ।
अगड़म-बगड़म धोबी के दुर्वचन बे-तुके बिगड़े थे । २८ ।
बड़ी देर से घर आई पत्नी को बुरा बताया था ।
मैं वह राम नहीं जो खोई सीता को घर लाया था । २९ ।
रावण के घर रही जानकी राम उसे सब जान गये ।
पर-गृह में रहने वाली को जानें क्यों फिर मान गये । ३० ।
धोबी-धोबिन का झगड़ालु क़िस्सा बड़ा बुरा सारा ।
सुना दूत से राम-प्रभु ने प्रण कठोर मन में धारा । ३१ ।
तन-मन-वचन-पुनीत सती सीता को तब अपनाया था ।
जनवादी-वाणी से पहले अग्निसात् करवाया था । ३२ ।
फिर भी लोकलाज के कारण लोकराज को अपनाया ।
रामराज संस्थापक राजा राम नहीं था घबराया । ३३ ।
स्वयं सुशील-स्वभाववती सीता की कठिन समीक्षा थी ।
अग्नि-परीक्षा में उत्तीर्ण उसकी गरल-परीक्षा थी । ३४ ।

लक्ष्मण को आदेश दिया सीता को वन में ले जाओ ।
ओ मेरे सुख-दुख के साथी भैया, साहस दिखलाओ । ३५ ।
सुन कर चर्चा घर में सारे इष्ट-बन्धु घबराये थे ।
राम-प्रभु ने कुशल-अनोखी वाणी से समझाये थे । ३६ ।
सुनी प्रभु की पुनराज्ञा लक्ष्मण भी मन में थे हैरान ।
फिर भी राजा राम की आज्ञा दास-अनुज क्या करे बखान । ३७ ।
रथ में सीता को बैठाया पथ में चर्चा चली नहीं ।
मन ही मन सब समझ गई सीता की वाणी हिली नहीं । ३८ ।
लोकोत्तर-चरित्र की लीला राम-बिना कर सकता कौन ।
ऊँचा है कर्तव्य भावना से इसलिये रही वह मौन । ३९ ।
कोमल-कुसुम-समान और फिर जो कठोर है वज्र-समान ।
ऐसे मन के मालिक हैं प्रभु-राम स्वयं प्रणपाल सुजान । ४० ।
रामाज्ञा से लक्ष्मण ने सीता को वन दिखलाया था ।
विधि-विधान से वाल्मीकि-आश्रम का स्थल हुलसाया था । ४१ ।
पहले जब वनवास हुआ तब ऋषि ने बतलाये जो स्थान ।
राम-प्रभु के रहने-हेतु उनमें टिके स्वयं भगवान् । ४२ ।
आज भगवती स्वयं जानकी आई ऋषि के आश्रम पर ।
देखा-सुना, काल-गति परखी निर्भर थी रामेच्छा पर । ४३ ।
मायापति की माया सीता शक्तिमान् की शक्ति सीता ।
राजा राम की रानी सीता गृहिणी गर्भवती थी सीता । ४४ ।
जिनके भजन-प्रताप पुंज से बने प्रभावशील ऋषि वर ।
उन्हीं राम की रमणी सीता आ पहुंची शुचि-आश्रम पर । ४५ ।
सगुण - ब्रह्म - रामावतार की शक्ति सीता कहलाई ।
पहले थी जो गृह-देवी अब वन-देवी बन कर आई । ४६ ।
ब्रह्मज्ञानी-विज्ञानी-ध्यानी ऋषिवर ने जान लिया ।
रामचरित के पट-परिवर्तन का रहस्य पहचान लिया । ४७ ।

सीता का सत्कार किया आश्रम में आश्रय दिया स्वयम् ।
ऋद्धि-सिद्धि-वृद्धि को सेवा में प्रस्तुत किया स्वयम् । ४८ ।
आदि कवि ने रामचरित के प्रथम लिखे जो कथा-प्रसंग ।
उनमें अपनी सक्रिय-सेवा का स्वीकार किया सत्संग । ४९ ।
यथाकाल सृष्टि के क्रम से प्रकृति की प्रक्रियानुसार ।
प्राकृत कुटिया में सीता ये जन्में निर्मल-युगल-कुमार । ५० ।
राज-महल में पली हुई वह राज-महल में रही हुई ।
अपनी आविर्भाव-कथा से पृथ्वी-पुत्री सही हुई । ५१ ।
मानो उसकी गोद में आये सूर्य-चन्द्र ही शिशु बन कर ।
रूप तेज की अमित-प्रभा का दिव्य-दृश्य था दृग्गोचर । ५२ ।
ऋषि-आश्रम पर सीता और राम-कुमारों की शोभा ।
देख-देख कर धन्य हुई सेविका "ऋद्धि-सिद्धि" वनिता । ५३ ।
सीता का वनवासी-जीवन उन्हें लगा था बहुत भला ।
जहां उन्हें महलों से अच्छा सेवा सद्भाव मिला । ५४ ।
शिशुओं का पालन-पोषण करतीं वे नहीं अघाती थीं ।
पलभर भी सीता की सेवा कभी नहीं बिसराती थीं । ५५ ।
जातकर्म-संस्कार हुआ संपन्न शास्त्रविधि के अनुसार ।
"लव-कुश" नाम दिया ऋषिवर ने धन्य हुए नवजात-कुमार । ५६ ।
गुरु-वशिष्ठ के आश्रम-गृह में राम गये शिक्षा-हेतु ।
बाल्मीकि-आश्रम बन गया "लव-कुश" का रक्षा सेतु । ५७ ।
भले हुए दशरथ के प्राण-दुलारे राम आदि सुत चार ।
बाल्मीकि को उनसे बढ़कर मिला सहज 'लव-कुश' का प्यार । ५८ ।
सीता की समयोचित-शिक्षा पर शिशुओं ने ध्यान दिया ।
'तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो' ऋषिवर को था मान लिया । ५९ ।
अहो, धन्य है सहनशीलता-संयम धन की गुण-गाथा ।
रामराज की मर्यादा पर झुकता है सब का माथा । ६० ।

विश्वामित्र ले गये थे राम-लक्ष्मण को वन में ।
"लव-कुश" स्वयं प्रकट हो आये वाल्मीकि के जीवन में । ६१ ।
आज और कल और प्रकृति से बढ़े-चढ़े दोनों सुकुमार ।
माँ का स्नेह मिला उनको ऋषिवर का पावन-प्यार-अपार । ६२ ।
भक्ति-भावना शक्ति-साधना धीर-धारणा अपनाई ।
"लव-कुश" ने ऋषिवर से सर्वोदयकारी शिक्षा पाई । ६३ ।
मंजुल-मधुर-पदों में रच कर गुरु ने उनको सिखलाया ।
राम-चरित का आंखों देखा हाल उन्हें था बतलाया । ६४ ।
चलते-फिरते काल चक्र के क्रम में बंधा हुआ संसार ।
अपनी शक्ति की सीमा-मर्यादा से होता व्यवहार । ६५ ।
अवधपति मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभुवर थे राजा राम ।
राजधर्म के मर्मज्ञाता नीतिपूर्ण करते सब काम । ६६ ।
राजधर्म की प्रथा निभाने अश्वमेघ-मख का संकल्प ।
किया और गुणवान् गुरु की आज्ञा मिली समय था-स्वल्प । ६७ ।
तन-मन-धन से सर्व आयोजन वेदी पर आरंभ हुआ ।
श्री वैदेही के अभाव का अवसर चिंता-स्तंभ हुआ । ६८ ।
धर्मशास्त्र की गौण विधि से स्वर्णिम-प्रतिमा बनवाई ।
सीता की प्रतिनिधिस्वरूप थी वह वेदी पर पधराई । ६९ ।
स्वस्थ-अवस्था की आस्था से यज्ञ-व्यवस्था बनी वहां ।
अश्वमेघ का अश्व चला पूजा पाकर था-जहां-तहां । ७० ।
लक्ष्मण-भरत पवनसुत आदि वीर सुरक्षा में तत्पर ।
चले अश्व के साथ सभी सब ओर विजय का-गूंजा स्वर । ७१ ।
साज-बाज वाला वह घोड़ा गतिक्रम से-दौड़ा-दौड़ा ।
पहुंचा वाल्मीकि के स्थल पर उसको लव-कुश ने पकड़ा । ७२ ।
सुना सेविकाओं से सीता ने रोका तो रुके न बाल ।
राम-प्रभु के बेटों ने भी देखा समझाया तत्काल । ७३ ।

लीलाधर की लीला न्यारी उपकारी भयहारी है ।
हरिजन-मन-संशय हारी सुख-दुःख में शिक्षाकारी है । ७४ ।
महाबली अलबेले दोनों बाल वीर-रक्ष के अवतार ।
राम-प्रभु के योद्धाओं से कहां मानते अपनी हार । ७५ ।
एक-एक कर लड़े सभी से नहीं अश्व को लौटाया ।
बड़े बड़े बलवीरों को मूर्छित कर भू-पर पधराया । ७६ ।
पल-पल की हर खबर मिली मख के दीक्षित-नायक-श्रीराम ।
यज्ञ-भार गुरु-जन को देकर आये देखा रण-परिणाम । ७७ ।
लंका-समर-विजेता राजा राम स्वयं हैरान हुए ।
अपने वनवासी-स्वरूप की स्मृति से भ्रान्तिमान् हुए । ७८ ।
अब क्या पूछें किससे कैसे बात करें अपने मन की ।
इधर उधर थी दीख रही उनको ममता अपनेपन की । ७९ ।
मूर्छित वीर नहीं कुछ बोले जो अपने दल के मुखिया ।
क्या करना है सोच-सोच कर राम मौन-मन थे दुखिया । ८० ।
बंधा खड़ा था अश्व पेड़ से हारे मारे वीर-समान ।
उसे देखकर धीर-धनुर्धर प्रभु ने धारे तीर कमान । ८१ ।
लव-कुश हो गये सावधान थी अनहोनी होने आई ।
पहल करेगा कौन समर में लगे सोचने प्रिय-भाई । ८२ ।
आश्चर्यों का हैं आश्चर्य युद्धवीर हैं दोनों ओर ।
पड़े बीच में जो अचेत-मूर्छित उनका कुछ चले न जोर । ८३ ।
बाल्मीकि सिद्धाश्रम में स्वयं समाधि-लीन हुए ।
सम्मुख देखा समय समर का सुरगण मन में दीन हुए । ८४ ।
देव-वृन्द का गगन-भवन पर सहसा हाहाकार हुआ ।
नाम के गर्जन-तर्जन-स्वर का फिर भू-पर संचार हुआ । ८५ ।
योग-समाधि खुली ऋषीश्वर जागे भागे आये थे ।
अपनी धर्म-सुता लव-कुश की माता-हित अकुलाये थे । ८६ ।

सीता ने जो देखा-सुना सब कुछ उन्हें सुनाया था ।
पिता-पुत्र के युद्ध-मध्य मध्यपस्थ उन्हें ठहराया था । ८७ ।
ऋषिवर के आते ही शिशु-शिष्यों ने अच्छा काम किया ।
राम-राज की कलह-कलंकी रण-शंका को थाम लिया । ८८ ।
परम प्रसन्न हुए ऋषिवर ने फिर सीता को समझाया ।
भावि-योजना में उसको कर्त्तव्य यथोचित बतलाया । ८९ ।
हे सीते, तेरे सतीत्व की शक्ति है वरदान हुई ।
भले-बुरे जन-भावों की सबको अच्छी पहचान हुई । ९० ।
यज्ञ राम का पूरा कर दो आया समय सुहाना है ।
पुनर्मिलन का स्वच्छ और स्वच्छंद-प्रबंध बनाना है । ९१ ।
माता को है प्रथम-गुरु का सहज-सुखद-सम्मान मिला ।
उसके बाद पिता को है संतति से मान-महान् मिला । ९२ ।
आओ, देर लगाओ मत अब धरा-गगन है देख रहे ।
श्री हरि-हर की कृपा दृष्टि से रघुकुल में क्यों क्लेश रहे । ९३ ।
पिता और पुत्रों का समर न होने दो इस धरती पर ।
आँच नहीं आने पाये भारत की सुकृत-कीर्ति पर । ९४ ।
आयु-विद्या-जप-तप-व्रत में अनुभव सिद्ध ऋषीश्वर के ।
अमृत-वचन सुने सीता ने युक्ति-युक्त-अवसर पर थे । ९५ ।
उन्हें नवाया शीस मिली आशीष ऋषीश्वर से तत्काल ।
सीता चली साथ आये फिर वीर-धीर-गंभीर सुवाल । ९६ ।
विधि के लेख अनोखे देखे पुत्रों ने पहचान लिया ।
पता नहीं किस भ्रम-विभ्रम से नहीं राम ने ध्यान दिया । ९७ ।
माता से संकेत मिला शिशुओं ने उसको जान लिया ।
"पहल नहीं हम करेंगे जननी" कहकर निश्चय मान लिया । ९८ ।
केन्द्र-बिन्दु जैसी थी सीता उभय-मध्य में खड़ी हुई ।
अपलक-नयन ध्यान में मग्न राम-शरण में पड़ी हुई । ९९ ।

एक वेणिधारिणी तापसी मूर्तिमती वन-देवी थी ।
अपने पति-परमेश्वर-राम-चरण-कमल-रज-सेवी थी । १०० ।

* सातवां विश्राम *

निकट-विकट-संकट टल जाने का अवसर पाया उसने ।
मौनी-मन से ब्रह्मर्षि को पल भर फिर ध्याया उसने । १ ।
उत्तर-रामचरित के द्रष्टा वाल्मीकि आ गये वहां ।
इधर सपुत्रा सीता थी उधर अवधपति-राम जहां । २ ।
रुका हुआ था शर-संधान करते थे अनुमान प्रभु ।
कर्म-कुशल, भावज्ञ स्वयं फिर क्यों बनते अनजान प्रभु । ३ ।
अमल-सकल-कुल-परंपरा को सफल बनाने वाले राम ।
आगे बढ़े, रुके, फिर बोले भ्रान्ति मिटाने वाले राम । ४ ।
अहो, आज मैं धन्य हुआ हे ऋषिवर, नमन करो स्वीकार ।
संशय सारे दूर करो अब हरो राम के मनोविकार । ५ ।
ऋषि-चरणों पर झुके राम तब राम-चरण में झुके कुमार ।
मंत्र-मुग्ध-मन-वचन-नयन से सीता करती शिष्टाचार । ६ ।
जाना माना पहिचाना फिर भी ऋषिवर ने लोकाचार ।
स्वयं निमाया परिचय देकर बन में हुआ मंगलाचार । ७ ।
अमृतवर्षा हुई उठे फिर मूर्छित राम-सैन्य-बलवीर ।
आकर्षक बन गया अनोखा युद्ध-स्वप्न सब का गंभीर । ८ ।
मूक-बधिर जैसे सब सोचें कौन कहां हम आये हैं ।
कहां अयोध्या में सुख पाया कहां विजन-बन घाये हैं । ९ ।

ऋषि-रघुवर-सीता-लव-कुश का था अद्भुत हो गया मिलाप ।
निर्मल-मन-वाणी से सबने उसे सराहा अपने आप । १० ।
अनंत कोटि ब्रह्माण्डों के नायक श्री राम कहाये हैं ।
उनकी लीला उनकी माया ने हम सब भरमाये हैं । ११ ।
जीवमात्र को शान्ति केन्द्र हरि-चरण-शरण-आलंघन है ।
यही सही सद्भाव हमारे जीवन का साधन-धन हैं । १२ ।
इस प्रकार करते विचार सारे अवधैया सुखी हुए ।
उन्हे देख कर पुनरुज्जीवित लव-कुश भी उत्सुकी हुए । १३ ।
क्रान्ति बदल गई शान्ति में फिर हुआ परस्पर मित्राचार ।
राजा राम अयोध्या लौटे वन में ऋषि-सीता-सुकुमार । १४ ।
शुद्ध-बुद्ध श्रुति-स्मृति-अनुसारी आगे चला यज्ञ का काम ।
आये फिर ऋषिवर के साथ सीता-लव-कुश ललित-ललाम । १५ ।
पूर्णाहुति से प्रथम देख कर सफल-यज्ञ का शुभ परिणाम ।
त्रिभुवन में मंगल-ध्वनि गूंजी जय राम श्री राम जय जय राम । १६ ।
संकट हारी सीताराम मंगलकारी सीताराम ।
गिरि-वनचारी सीता राम अवध-विहारी सीताराम । १७ ।
धन्य ऋषीश्वर बाल्मीकि और धन्य शिष्य-शिशु शोभाधाम ।
धन्य अवध की यज्ञ भूमि हैं जिस पर प्रकटे सुख-अविराम । १८ ।
यज्ञ हुंआ संपूर्ण राम का विधिवत् लगा राम-दरवार ।
यथापूर्व निर्विघ्न प्रजा के सर्वोदय-हित के अनुसार । १९ ।
धर्मधुरंधर राजा की प्रजा सदा सुख पाती मौन ।
वर्णाश्रम की मर्यादा का उल्लंघन कर सकता कौन । २० ।
ईति-भीति देश-द्रोह की दुर्घटनायें कभी नहीं ।
रोग-शोक भय-मोह-जाल की बुरी दशायें कभी नहीं । २१ ।
इसीलिए सब लोग सदा से राम राज के गुण गाते ।
राम-नाम की महिमा सुनकर प्राणी जीवन सुधराते । २२ ।

बदरी आश्रम पर बैठी थी स्वयंप्रभा गन्धर्व सुता ।
मध्यावस्था में पहुंची थी उसकी जप-तप-भावुकता । २३ ।
यज्ञ-काल में पुनर्मिलन की राम-कथा सुन पाई थी ।
प्रथम स्वयंवर-प्रथा-कथा ने उसकी व्यथा मिटाई थी । २४ ।
अब तो उसका हृदय हिलोरें लेने लगा लगन लागी ।
क्षीर-सिन्धु में शेष-शयन पर श्री पति ने निद्रा त्यागी । २५ ।
हरि-प्रबोधिनी-एकादशी-तिथि का सफल विधान हुआ ।
कमला ने तब प्रश्न किया हे स्वामी किसका ध्यान हुआ । २६ ।
भक्ति-भाव तप-त्याग और अनुराग-प्रेम के अनुगामी ।
सहजभाव से बोले श्रीपति विष्णु सर्वान्तर्यामी । २७ ।
सुनो भामिनि, तेरी छाया मणिप्रभा-रत्नाकर की ।
बेटी स्वयंप्रभा है जैसी तू रत्नाकर-सागर की । २८ ।
मुझे वरण-हेतु है उसने जीवन-मरण विचार लिया ।
तात-मात-गृह-सुख सब त्यागे गिरि-वन में संचार किया । २९ ।
उसकी सात्विक-भाव-धारणा का अकर्षण जान पड़ा ।
सच तो यह है देवी, तेरी अभिलाषा का मान बढ़ा । ३० ।
कृतयुग में सागर-मंथन पर उत्तम-रत्न तुम्हें पाया ।
गौरी-शंकर के विवाह पर तेरा भाव समझ आया । ३१ ।
तुमने अपने उसी भाव से स्वयंप्रभा का तन पाया ।
मैंने है रामवतार में मर्यादा को अपनाया । ३२ ।
स्वयंप्रभा ने तेरी-स्मृति से मेरा वरण किया स्वीकार ।
भावाकर्षण से उसका बढ़ता जाता है वह अधिकार । ३३ ।
अभी और कुछ ससय शेष है पूरी होगी अभिलाषा ।
उमा-महेश्वर सीता-राम के विवाह जैसी आशा । ३४ ।
तुमने स्वयंप्रभा के भाल-भाग्य पर जो खींची रेखा ।
स्वयं भवानी-ब्रह्माणीं के साथ उसे जब था देखा । ३५ ।

उसी हेतु से मणि-पर्वत पर मणिप्रभा और रत्नाकर ।
गये तुम्हारे पिता-सिन्धु-रत्नाकर से शिक्षा पाकर । ३६ ।
स्वयंप्रभा को भी अब जल्दी उसी दिशा में जाना है ।
शेषकाल अपने शुचि-व्रत का रहकर वहां बिताना है । ३७ ।
सावधान तुम भी हो जाओ करो न मन में शंका-खेद ।
तेरा और स्वयंप्रभा का दृश्य-भेद-अदृश्य-अभेद । ३८ ।
जिस प्रकार मैं विष्णु-शिव-ब्रह्मा हैं सर्वदा प्रसन्न ।
क्रिया-भेद से भिन्न-भिन्न प्रक्रिया-भेद से सदा अभिन्न । ३९ ।
उसी भान्ति तुम लक्ष्मी शिवा-सरस्वती अलगाती हो ।
त्रिगुणा-शक्ति-भेद सर्वगुण-एकाकार बनाती हो । ४० ।
विष्णुप्रिया-स्वयंवर में तुम स्वयंप्रभा में समा जाना ।
अथवा स्वयंप्रभा को अपनी आकृति में मिला पाना । ४१ ।
त्रेता-द्वापर-युग-सन्धि में यह लीला पूरी होगी ।
तिरोभाव रामावतार का होने की घड़ी होगी । ४२ ।
इतना कह कर नारायण फिर शान्तभाव से मौन हुए ।
लक्ष्मी के स्वभाव-सुन्दर-गुण स्वयंप्रभा वश गौण हुए । ४३ ।
यथापूर्व उसने फिर था हरि-चरण-कमल-संस्पर्श किया ।
अपनी और स्वयंप्रभा की भेद-अभेद-दशा को परख लिया । ४४ ।
भाव-विभाव परस्पर मिल कर प्रकट हुए फिर दोनों ओर ।
प्रश्नोत्तर से लक्ष्मी-नारायण हो गये आनन्द-विभोर । ४५ ।
उनके निर्णय का संकेत स्वयंप्रभा के आश्रम पर ।
पहुंचाने का यत्न हुआ तत्क्षण समयोचित क्रम पर । ४६ । ४६ ।
श्रीमन्नारायण का अन्तर्मन नारद बन कर धाया ।
बदरी-आश्रम पर उसने स्वयंप्रभा को समझाया । ४७ ।
उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर वह देवी उठ धाई थी ।
धर्मवीर-दुग्गर की धरती पुण्यमयी पुजवाई थी । ४८ ।

तात-मात रत्नाकर-मणिप्रभा का नूतन वासस्थान ।
उच्च तीन शिखरों वाला मणिपर्वत माना स्वर्ग-समान । ४९ ।
जैसे सुता-हेतु से मैना-हिमगिरि हुए देव साक्षात् ।
वैसे सुता-हेतु से मणिप्रभा-रत्नाकर हैं विख्यात । ५० ।
सर्व-सुरक्षित सुदृढ़-गढ़ जैसा अपनाया गुफा-भवन ।
ऋद्धि-सिद्धि वृद्धि-परिपूर्ण गुप्त-केन्द्र जिसके गिरि-वन । ५१ ।
नव्य-लगन से भव्य-भवन में दिव्य-वचन दुहराती थी ।
कुल की कला-कुशलता वाली वीणा मधुर बजाती थी । ५२ ।
"भवितप्रियो माधवः" की सूक्ति नहीं भुलाती थी ।
नारद की शिक्षानुसार वह विष्णु-भक्ति पद गाती थी । ५३ ।
सहज भाव गिरि-वन में उसकी स्वर लहरी लहराती थी ।
स्वयंप्रभा श्री विष्णु प्रिया अमृत रस बरसाती थी । ५४ ।
जगदादि मनादिमजं पुरजं शरदंबर तुल्यतनुं वितनुम् ।
धृतकंजरथांग गदं विगदं प्रणमामि रमादिपति तमहम् । ५५ ।
कमलाननकंज रतं विरतं हृदि योगि जनैः कलितं ललितम् ।
सुजनैः सुलभं कुजनैरलभं प्रणमामि रमादिपतिं तमहम् । ५६ ।
गुणिनां प्रवरं मुनिचित्तहरं युधि वीरवरं शांर्ङ्गधरम् ।
अपवर्गकरं शुचिस्वर्गधरं प्रणमामि रमादिपतिं तमहम् । ५७ ।
सगुणं विगुणं सर्वाकारं सर्वाधारं सर्वागारम् ।
अजरं ह्यमरं सुखदं वरदं प्रणमामि रमादिपतिं तमहम् । ५८ ।
अमर गीत यह अलबेला उसबेला में मंगलकारी ।
प्रीति-रीति के सहयोगी-स्वर से था त्रिभुवन संचारी । ५९ ।
भक्तिगीत संगीतभरा जादू है उस में खेद नहीं ।
स्पष्ट कहे संगीत शास्त्र स्वर में ईश्वर में भेद नहीं । ६० ।
"वेदानां सामवेदो ऽस्मि" गीता गायक सुना गये ।
"मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्राहम्" इति सिखा गये । ६१ ।

"गायकानामनायासेन मुक्तिः" गुरुओं का उपदेश ।
अमर गीत-संगीत-प्रीत से वशवर्ती होते अखिलेश । ६२ ।
वह गंधर्व वेद गंधर्वों की कुलविद्या कही गई ।
स्वयंप्रभा गंधर्वसुता के मन-भाई हरि-भक्ति नई । ६३ ।
युगानुसारी संस्कारों से लक्ष्मी का रूपान्तर थी ।
बनी तापसी स्वयंप्रभा श्री विष्णु-वरण में तत्पर थी । ६४ ।
पूर्णकाम रामावतार का यथाकाल अवसान हुआ ।
जल में राम थल में सीता का फिर अन्तर्धान हुआ । ६५ ।
अन्य सहचरों ने अपनाये मूल-तत्व अपने अपने ।
जहां से आये वहां गये फिर श्री हरि-नाम लगे जपने । ६६ ।
श्री हनुमान्-विभीषण दोनों राम भक्त हो गये अमर ।
राम-कथा के द्रष्टा श्रोता वक्ता साक्षी चतुर प्रवर । ६७ ।
स्वयंप्रभा पर रामकथा का सर्वोत्तम प्रभाव पड़ा ।
जिसके बल पर ही उसका साधनामार्ग पर भाव बढ़ा । ६८ ।
जैसे धन्य हुई कृतयुग में अमृत मंथन की वेला ।
श्री लक्ष्मी नारायण का संयोग हुआ था अलबेला ॥ ६९ ।
वैसे त्रेता द्वापर का युगसंधि-समय कृतार्थ हुआ ।
स्वयं प्रभा श्री विष्णु का सम्मेलन-समय यथार्थ हुआ । ७० ।
श्री लक्ष्मी का स्वयंप्रभा में समावेश था अति सुन्दर ।
श्रीपति विष्णु स्वयं स्वयंवर में उसके मनोहर वर । ७१ ।
सत्य सुमेरु-स्वर्ण गिरि के विष्णु लोक से चली बरात ।
मणि पर्वत वाले नृ-लोक में आ पहुची देखी साक्षात् । ७२ ।
श्री विष्णु ने सुन्दर वैष्णव दूल्हा रूप संवारा था ।
विश्वमोहिनीं के स्वयंवर से न्यारा अति प्यारा था । ७३ ।
सशंखचक्रं सकिरीट कुण्डलं सहार वक्ष स्थल कौस्तुभश्रियम् ।
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्" । ७४ ।

एवमादि शास्त्रोक्त सगुण साकार विष्णु थे गरुड़सवार ।
शिव ब्रह्मादि के वाहन वृष-हंस चले दल-बल अनुसार । ७५ ।
विष्णु-सखा सुर-सुख की शोभा शेष शारदा करें बखानें ।
राम और शिव के विवाह की वर यात्रा हो गई अनुमान । ७६ ।
ऋद्धि सिद्धिवृद्धि संपन्न मणि गिरि पर पाया सत्कार ।
मणि प्रभा-रत्नाकर के मन में था नूतन हर्ष अपार । ७७ ।
इन्द्र-वरुण अग्नि वायु आदि सब सुर थे महाप्रसन्न ।
मणि पर्वत त्रिकूट के खंड खड़े इन्द्र के अति आसन्न । ७८ ।
बोले हे सुरराज हुआ है दूरागति से तुम्हें क्लेश ।
पंख हमारे कटे न होते हम करते सेवा सविशेष । ७९ ।
व्यंग्य-रंग के छींटे मारे हारे थे प्यारे सुरराज ।
मौनी ध्यानी बने वहां फिर मुखर हुआ सुन्दर ऋतुराज । ८० ।
उस बहार के क्या कहने हैं भूल गया सारा अनुताप ।
स्वागतकर्ता-अभ्यागत-वर-मंडल करें प्रीत की बात । ८१ ।
तीन भाग से ही त्रिकूट पर सभी बराती ठहराये ।
हरि-हर-ब्रह्मा के विभाग में सब ने अतिशय सुख पाये । ८२ ।
वर-पूजा के समय अनोखा देखा गया सखा-सहचार ।
सभी युवा थे केवल ब्रह्मा वृद्ध पितामह थे लाचार । ८३ ।
रुद्राणी-ब्रह्माणी ने नारी-दल में शामिल होकर ।
गुप्तभाव से लिया "शिलोदक" छिटक दिया विधि के ऊपर । ८४ ।
कायाकल्प हुआ पल में बूढ़े ब्रह्मा जी तरुण हुए ।
अपने कुल के अमृत-जल पर अतिप्रसन्न थे वरुण हुए । ८५ ।
अद्भुत परिवर्तन को देखा दोनों ओर हुआ संतोष ।
श्री विष्णु को वधूपन दें नीलकंठ शिव आशुतोष । ८६ ।
खान-पान परिधान-व्यवस्था अन्नपूर्णा के आधीन ।
यथाकाम थे भोज्य-पेय रस भरी रसोई बनी नवीन । ८७ ।

वेदी मंडप सूर्य कुण्ड का संज्ञाकरण मनोहर था ।
"आदित्यानामहं विष्णुः" श्री हरि का अति प्रियकर था । ८८ ।
आज चार मुख ब्रह्मा जी के मंत्रपाठ से धन्य हुए ।
सस्चर चारों वेद श्रवण कर गिरि-वन अति प्रसन्न हुए । ८९ ।
मंगल लग्न मुहूर्त सकल थे सफल स्वयं उस अवसर पर ।
लक्ष्मी रूपा स्वयंप्रभा थी वधू विष्णु थे सुन्दर वर । ९० ।
अज अनादि-कुल अजर अमर गोत्र-नाम उच्चार हुआ ।
श्री विष्णु के वरस्वरूप का पाणिग्रहण संस्कार हुआ । ९१ ।
विधि विधान से पूर्ण हुआ संपूर्ण वधू वर का सम्मान ।
भाव-मग्न सब थे फिर नारद को हुआ श्रवण मधु गान । ९२ ।
इधर उधर निर्झर गिरि वनके जल-थल में थी भरी भरी ।
"अमर गीत जगदादिमादि" मुखर हुई फिर स्वरलहरी । ९३ ।
गीति प्रीति रीति की संयोग प्रथा साक्षात हुई ।
स्वयंप्रभा श्री विष्णु की अमर कथा विख्यात हुई । ९४ ।
दिग्दिगन्त में हर्ष भर गया जल थल नभचर मुखर हुए ।
देव और गंधर्व कुलों के मंगलमय सुख मधुर हुए । ९५ ।
स्वर्ण सुमेरु पर्वत का मणि पर्वत से संबन्ध हुआ ।
युगानुसारी प्रणय कथा वर्णन का सत्य प्रबन्ध हुआ । ९६ ।
रत्नाकर सागर और रत्नाकर गन्धर्व महान् हुए ।
श्री लक्ष्मी और स्वयंप्रभा के एकाकार प्रमाण हुए । ९७ ।
ब्राह्म मुहूर्त में थी पुण्य विदाई की वेला आई ।
गुफा-भवन में शक्तिपीठ की पूर्ण प्रतिष्ठा हो पाई । ९८ ।
श्री ब्रह्मा शंकर आदि अपने सुर-सुखा बुलाये थे ।
श्री विष्णु ने एक पंथ दो काज सफल बनवाये थे । ९९ ।
लक्ष्मी रूपा स्वयंप्रभा के वैष्णव-भावों के अनुसार ।
विष्णुप्रिया क्रिया प्रक्रिया से जप-तप-व्रत के आधार । १०० ।

बना वैष्णवी-शक्ति-पीठ इस में हरि-हर-ब्रह्मा बैठे ।
उनके साथ सभी देवों ने देवी-स्तोत्र पढ़े मीठे । १०१ ।
वे ही स्तोत्र सत्य सिद्ध मंत्रानुरूप थे बन पाये ।
दुर्गासप्तशती में क्रम से ऋषिवाणी ने प्रकटाये । १०२ ।
मणिपर्वत पर एक समय सिद्ध प्रसिद्ध हुए दो काम ।
स्वयंप्रभा का पाणिग्रहण-शक्तिपीठ-दर्शन अभिराम । १०३ ।
लक्ष्मी-रुद्राणी-ब्रह्माणी तीन देवियां स्वयं जहां ।
भिन्न-अभिन्न हुई बैठी हैं ऐसी शोभा मिले कहां । १०४ ।
साक्षी अथवा साहचर्य से तीन शक्तियां टिकी जहां ।
स्वयं प्रकट-अप्रकट रूप से ऐसी शोभा मिले कहां । १०५ ।
अपने युग में अपने तप से अपना प्रण संपूर्ण जहां ।
किया वैष्णवी-शक्ति ने फिर ऐसी शोभा मिले कहां । १०६ ।
शक्तिपीठ हैं अन्य सती के अंग-पात से जहां-तहां ।
स्वयंप्रभा का सिद्धपीठ यह ऐसी शोभा मिले कहां । १०७ ।
अन्य साधकों कों उन पीठों में श्रम होंता कठिन जहां ।
सिद्धिपीठ यह स्वयंप्रभा का ऐसी शोभा मिले कहां । १०८ ।
सब तीर्थों पर शैवों के शक्तिपीठ हैं जहां-वहां ।
वैष्णव-पीठ स्वयंप्रभा का ऐसी शोभा मिले कहां । १०९ ।
दक्षिण वाला स्वयंप्रभा का तीर्थ शैव है गौण बहां ।
उत्तर वैष्णव-प्रमुख-पीठ यह ऐसी शोभा मिले कहां । ११० ।
सद्विचार से शास्त्र-लोकमत का आलोचन हुआ जहां ।
शुद्ध-बुद्ध यह शक्तिपीठ है ऐसी शोभा मिले कहां । १११ ।
शैव-शाक्त-शास्त्रों का ज्ञान विद्वानों को होता है ।
शक्ति-माता का सम्मान सब जीवों को होता है । ११२ ।
लोकपति श्रीपति विष्णु ने स्वयंप्रभा का वरण किया ।
सिन्धु-सुता लक्ष्मी ने था वही रूप संवरण किया । ११३ ।

पूर्णकाम लोकाभिराम श्रीविष्णु पधारे अपने धाम । ।
मणि-कांचन-संयोग हुआ सुर-गिरि-नर-गिरि के परिणाम । ११४ ।
कुछ दिन श्री विष्णु के पास सबने किया सहर्ष निवास ।
यथा नियम फिर लौटे सारे सखा स्वयं अपने आवास । ११५ ।
युगानुसारी मंगलकारी वैष्णव - मत - संचार हुआ ।
इस डुग्गर की पावनता का सहज प्रचार-प्रसार हुआ । ११६ ।
साधारण-परिवारों में भी शुभ-विवाह के अवसर पर ।
महिला मंडल के श्रीमुख से पड़ें सुनाई गीत मधुर । ११७ ।
बड़े बड़े योधे, सुर-मुनिनर उमा-रमा-वस्यात्रा में ।
आयें हैं सखियो, लो देखो सत्कारो अतिमात्रा में । ११८ ।
वर को विष्णु और वधू को लक्ष्मी कह कर मान करें ।
युगों-युगों से हम विवाह में उभय-पक्ष सम्मान करें । ११९ ।
प्रभु की कृपा सदा वरदानी-शक्ति अपने साथ रहे ।
यही सही हम करें कामना परंपरा की साख रहे । १२० ।
अब जम्मू-कश्मीर-प्रान्त में मानशील दोनों सुन्दर ।
श्री वैष्णवी पीठ और श्री क्षीर भवानी का मन्दिर । १२१ ।
श्री विष्णु-शिव-शक्ति के वैष्णव-शैव-साधना स्थान ।
श्री रघुनाथ-अमरनाथ स्वामी को जानें सभी सुजान । १२२ ।
कांश्मीर के शैव-क्षेत्र श्री अमरनाथ में सोमलता ।
डुग्गर के वैष्णव-क्षेत्रिय-मणि-पर्वन में शिलोदक था । १२३ ।
दिव्य-रसायन यज्ञ-कर्म के उपादान थे सुधा-समान ।
अब आया कलि-काल हो गये प्राणवान्-रस-अन्तर्धान । १२४ ।
त्रेता बीता द्वापर आया चलती चर्चा -परिचर्चा ।
डुग्गर के वैष्णवी पीठ की होती थी महती अर्चा । १२५ ।
"भिन्नरुचिर्हि लोकः" उक्ति सदा सफल कहलाती है ।
क़ाल-क्रम से लोक-उपक्रम-प्रथा भिन्नता पाती है । १२६ ।

वैष्णव-शक्ति पीठ प्रमुख यह सदा स्वयं पुजवाया है ।
द्वापर के पुराण-ग्रन्थों में सुन्दर वर्णन आया है । १२७ ।
बड़े बड़े ऋषि-मुनि-आचार्य विद्वानों ने किया प्रचार ।
शक्ति-साधना का उपलब्ध कराया ग्रंथ-रत्न-भण्डार । १२८ ।
उनमें देवी भागवत और श्री दुर्गासप्त शती ।
शक्ति-पूजा-पद्धति के पथ-दर्शक हैं सर्वमुखी । १२९ ।
यथाकाल और यथाकाम साधक करते हैं सदनुष्ठान ।
नवरात्रों में शक्ति-पूजा का सर्वत्र विशेष-विधान । १३० ।
घर-मन्दिर में आयोजन होता हैं सुविधा के अनुसार ।
स्वयं सिद्ध-शक्ति-पीठों में अनुष्ठान का पुण्य अकार । १३१ ।
युग-युग में शक्ति-पूजा के मिलते हैं शास्त्रोक्त-प्रमाण ।
"कलौ चण्डी विनायकौ" कलियुग में है प्रमुख-विधान । १३२ ।
इस प्रकार डुग्गर की धार्मिक-पूंजी हैं वैष्णों-दरबार ।
युगानुसारी परिवर्तन इस में होते आये कई बार । १३३ ।
लिखे गये आख्यान और व्याख्यान सुनाये गये अनेक ।
बल-बुद्धि-विद्या-धन-साधन से हैं धन्य एक से एक । १३४ ।
उन सबका मति-मंथन करना जिज्ञासु मन का हैं काम ।
यथा शक्ति और यथा मति मेरा भी परिश्रम है अविराम । १३५ ।
मैं डुग्गर का वासी हूं रियासी मेरा मूल-स्थान ।
भोग-योग से जम्मू में हुआ पूर्वजों का सम्मान । १३६ ।
श्रीरघुनाथपुर में रहकर मैंने पूर्वाभ्यास किया ।
श्री वैष्णवी पीठ-प्रसंग-लघु कृति का आयास किया । १३७ ।
तर्क-वितर्क सदा संभव हैं इस में कोई खेद नहीं ।
चित्र-विचित्र-कथाओं में कब रुकते हैं मतभेद कहीं । १३८ ।
अपना केवल एक लक्ष्य है परिवर्तन पर ध्यान रहे ।
मूल तत्व की सत्ता और महत्ता की पहचान रहे । १३९ ।

धर्मकेन्द्र-शिक्षा संस्थान सदाचार के हैं आधार ।
सर्वोदय-समयोचित-प्रगतिशील रहे इनका व्यवहार । १४० ।
अपने इस आदर्श-खातन-शक्तिपीठ का चिर-सम्मान ।
यथापूर्व संरक्षित होकर करे पुनर्नवयुग-निर्माण । १४१ ।
सच है पहले से यहां अब अनेक हैं सुविधायें ।
फिर भी विगत-कार्यकारी-दल बता रहा है दुविधायें । १४२ ।
उन्हें शिकायत हैं इनसे उनसे भी इन्हें शिकायत है ।
अभ्युत्थान-नवनिर्माण परिवर्तन की आदत हैं । १४३ ।
पुनर्गठन से नया-पुराना अच्छापन स्वीकार करें ।
करे शिकायत फिर जो कोई उसका बहिष्कार करें । १४४ ।
धर्मकेन्द्र और जन-सेवा का हैं शिक्षा ही मूलाधार ।
शक्तिपीठ में शिक्षामठ का यथा शीघ्र हो उचित-विचार । १४५ ।
शास्त्राचार - विचारों से संस्कार-शुद्ध - पूजा - उपचार ।
सर्वसमर्थ-सशक्त-विधि से रहे प्रशस्त वैष्णों-दरबार । १४६ ।
अर्चनस्य प्रसादेन देवत्वं संप्रतिष्ठति ।
अर्चनस्य प्रमादेन देवत्वं संविनश्यति । १४७ ।
आस्तिकता से सह-अस्तित्व-समता-क्षमता-लाभ मिले ।
नास्तिकता से दंभ-द्वेष भय-विघटन-विष की वेल फले । २४८ ।
समझदार के लिये हमेशा एक इशारा काफी हैं ।
मूलतत्व आर्यत्व हमारा गुरुपद का आकांक्षी हैं । १४९ ।
जहां जहाँ हैं राम-कथा वहां वहां हैं स्वयंप्रभा ।
द्रष्टा-श्रोता-वक्ता राम कथा की बन गई विष्णुप्रिया । १५० ।
स्वयं सिद्धा - स्वयंप्रभा - वैष्णों - लीला - अमर - कथा ।
'अव्यय' हैं डुग्गर के शक्तिपीठ-पुण्य की प्रवर-प्रथा । १५१ ।

ॐ

समाप्त

"अव्यय"